दिसम्बर-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०१८

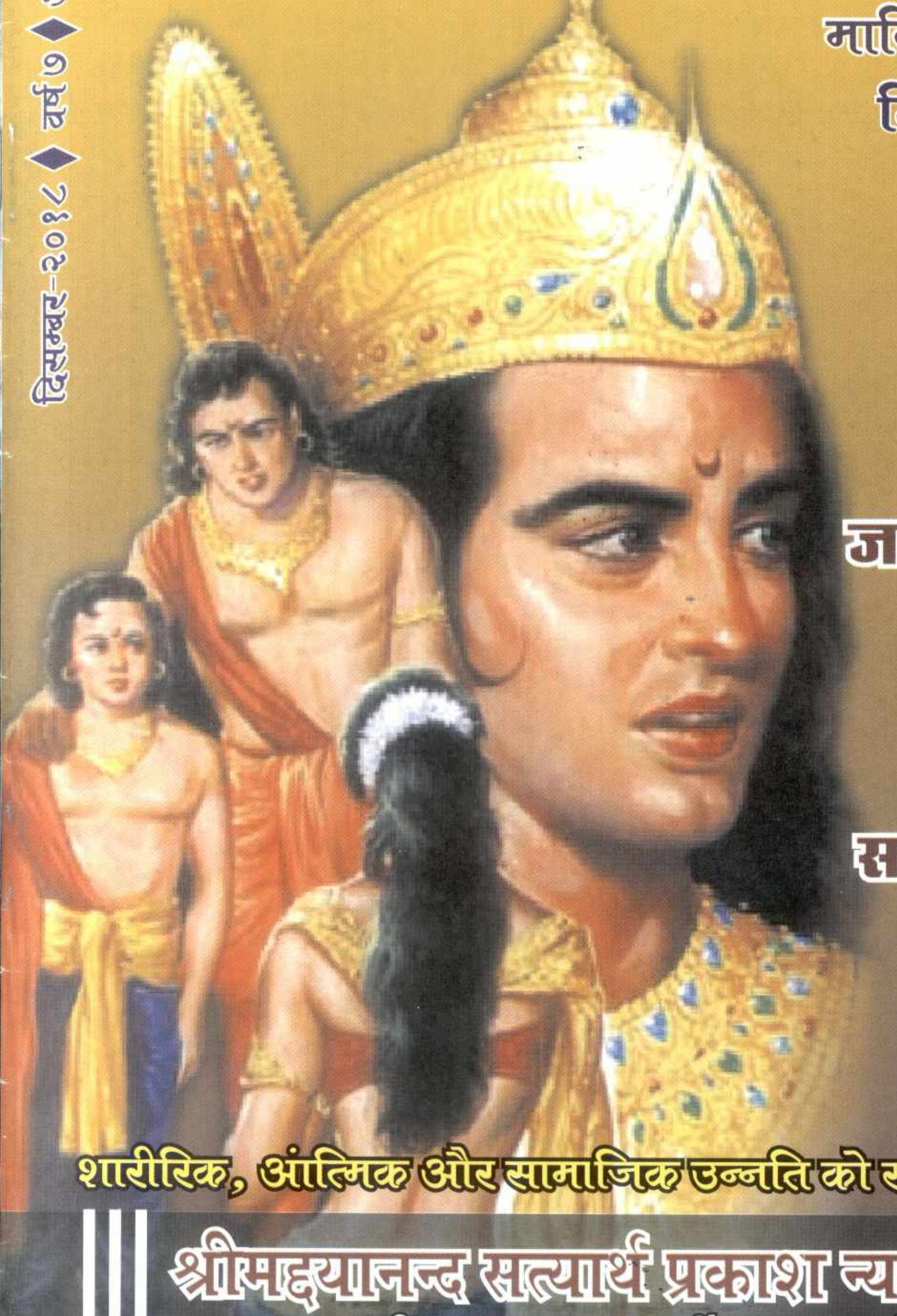

वेद सृष्टि के,
आदि में थे।
उनमें किञ्चित,
इतिहास नहीं।
जहाँ कहीं इतिहास,
लिखा हो।
वह अपौरुषेय
ग्रन्थ नहीं।
सत्यार्थ प्रकाश को,
यदि समझोगे।
भटकोगे,
तुम कहीं नहीं।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८४

क्या खुशबू, क्या स्वाद, एम डी एच मसाले हैं खास

94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

खाइये और खिलाइये मज़ेदार स्वाद का आनन्द उठाइये

MDH
मसाले

असली मसाले
सच–सच

ESTD. 1919

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

समाचार २६ **हलचल २७**

०४	वेद सुधा
१०	स्वामी श्रद्धानन्द
११	वैदिक वाङ्मय एक सामान्य परिचय
१५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/१८
१६	गीता का कर्म सन्देश
१८	सोच ऊँची, नजर नीची हो
२०	पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल
२३	'राजा महेन्द्र प्रताप'
२५	ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-५
२८	स्वास्थ्य- नेत्रदृष्टि क्या है?
२९	कथा सरित- महात्मा की बिल्ली
३०	विविध सृष्टि ईश्वर की रचना

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - 11000 रु.	$ 1000
आजीवन - 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय - 400 रु.	$ 100
वार्षिक - 100 रु.	$ 25
एक प्रति - 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११९
कार्तिक कृष्ण अमावस्या
विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४

December - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०७

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

श्रेष्ठ धन की छः प्रार्थनाएँ

ओं इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।। - ऋगवेद २/२१/६

हे (इन्द्र) आप (अस्मे) हमें (दक्षस्य) बल द्वारा उत्तम विद्या से (सुभगत्वम्) अत्युत्तम ऐश्वर्य (रयीणाम् पोषम्) और आवश्यक धनों द्वारा (तनूनाम् अरिष्टिम्) शरीरों की रक्षा करें और (वाचः स्वाद्मानम्) हमारी वाणी में इतना माधुर्य मिठास प्राप्त करावें कि (सुदिनत्वम् अह्नाम्) हमारा हर दिन शुभ व्यतीत हो (श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि) ऐसे धनों को ही आप हमें धारण कीजिए।

हे परमेश्वर! हमें सर्वोत्कृष्ट धन की प्राप्ति के लिए कुशल, निपुण, चेतना व ज्ञान द्वारा सभी वाम मार्गों को छोड़ते हुए, अंहिसायुक्त कर्म द्वारा, मीठी-मधुर वाणी के व्यवहार को अपनाते हुए अपने तीनों शरीर की न्यूनताओं को पूर्णकर, यश-बल और कीर्ति को प्राप्त करें।

प्रस्तुत मंत्र में वेदमाता ने प्रभु से श्रेष्ठ धनों की याचना की है। सृष्टि रचयिता परमेश्वर सदा खुले हाथों से बिना भेद-भाव, ऊँच-नीच एवं जाति-पाति के, देता ही रहता है, क्योंकि यह उसका (परमेश्वर का) स्वाभाविक गुण है।

श्रेष्ठानि द्रवणानि- श्रेष्ठ धनों की प्राप्ति-श्रेष्ठ कर्मों और पुरुषार्थ द्वारा अर्जित धन ही 'श्रेष्ठ धन' कहा जायेगा। उदाहरण के लिए एक अध्यापक को गुरु का दर्जा प्राप्त है। उसका कर्तव्य है कि वह पूरी निष्ठा से समय का सदुपयोग करते हुये विद्या का प्रसार (प्रचार) हर विद्यार्थी तक पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ करे। वेद माता ने यहाँ उन श्रेष्ठ धनों के लिए छः प्रार्थनाएँ की हैं जो ये हैं-

१. **चित्तिम् दक्षस्य-** दक्षता, बल, उत्साह और निपुणता से आती है। अर्थात् हम हर कार्य को करने में कुशल-निपुण हों, और कभी भी कर्म मार्ग में कुण्ठमस्तिष्क व विचलित न होवें। हम प्रत्येक समस्या को सुलझा करके आगे बढ़ने वाले हों। हम में इतना सामर्थ्य, उत्साह और निपुणता का ज्ञान हो कि हम इसका सदुपयोग करते हुये समाज और जगत् का उपकार कर सकें। हम इस भौतिक धन का कभी भी दुरुपयोग न करें यानि हम धन के अभिमान से चूर होकर अपनी शक्ति का प्रयोग दुर्बलों व निर्बलों को सताने में न करें। अपितु इसका प्रयोग ग्रस्त व पीड़ितों हेतु उनकी रक्षार्थ करें।

२. **सुभगत्वम् अस्मे-** हे नाथ! हमें सौभाग्य सम्पन्न बनाइए। यहाँ **'भग'** शब्द के छः अर्थ हैं- ऐश्वर्य, धर्म, यश, शोभा, ज्ञान और वैराग्य (बुराईयों के प्रति अरुचि) अर्थात् हमारी प्रत्येक क्रिया में 'यश' व 'श्री' टपके। 'भग' के साथ 'सु' उपसर्ग लगाने से 'सुभग' अर्थात् ये वस्तुएँ शोभन होनी चाहिए बनावटी नहीं। पापाचार से अर्जित धन कृत्रिम ऐश्वर्य है। रिश्वत, जुआ, लूट-पाट, काला धन आदि कभी भी सुभग नहीं हो सकते।

३. **रयीणां पोषम्-** हम जीवन यात्रा के लिए आवश्यक धनों का पोषण करने वाले हों। 'इष्ट चिन्तन' से ही सौभाग्य की उपलब्धि और सिद्धि होती है। शुभ कर्मों में लगाया धन ही पुष्ट होता है। इसका सीधा 'भाव' यही हुआ कि मेरा धन शुभ कर्मों में लगे, जिससे धन और कीर्ति निरन्तर बढ़ते रहते हैं। उदाहरण के लिए सेवा, सुश्रूषा अर्थात् जरूरतमन्दों गरीबों को विद्या का दान, बीमारों का इलाज आदि में खर्च किया गया धन कई गुणा बढ़ता रहता है। यदि धन नहीं है अर्थात् भौतिक धन के कम होने पर 'सेवा' के माध्यम से भी यश और कीर्ति निरन्तर बढ़ते रहते हैं।

४. **अरिष्टिम् तनूनाम्-** 'पहला सुख निरोगी काया'। शरीरों में निरोगता सुकर्मों से ही आती है। हमारे तीनों शरीर- स्थूल, सूक्ष्म और कारण के सुसंस्कारों से मिलकर ही व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ माना जाता है। यहाँ 'सूक्ष्म शरीर' से तात्पर्य है आत्मिक ऐश्वर्य अर्थात् जीवनों का समुत्थान- जिससे परिवार-समाज और राष्ट्र का समुत्थान होता है और हर दिन सुदिन बनते हैं। यहाँ एक छोटा सा प्रश्न मन में उठता है कि- शरीरों की न्यूनताएँ कब खत्म होगीं? उत्तर- यहाँ शरीरों की अहिंसा और

स्वास्थ्य से तात्पर्य है कि हम अपने शरीर से कोई भी हिंसायुक्त कर्म न करें और यह शरीर सदा स्वस्थ रहे। महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में शरीर की निरोगता के लिए 'अष्टांग योग' पर विस्तार से चर्चा की है। जो हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। यम और नियमों पर चलते हुए प्रतिदिन ब्रह्ममुर्हूत में आसन सिद्ध कर 'प्राणायाम साधना' द्वारा चित्त को एकाग्र कर तीनों शरीरों को निरोग एवं सुगठित बनाया जाता है। और यही शरीर की निरोगता का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण उपाय और साधन है।

५. **वाचः स्वाद्मानं**- हे प्रभो! आप हमारी वाणी में मिठास माधुर्य प्राप्त कराईये। यदि हम किसी भी ऐंक कर्म के माध्यम से जगत् को वश में करना चाहते हैं तो मीठी वाणी के प्रयोग से ही यह सम्भव हो सकता है। मीठा वचन ही सदा औषध का काम करता है, और कटु वचन तीर का। क्योंकि वह कान के रास्ते से घुसकर समस्त शरीर को बींध डालता है। हमारी वाणी इतनी मधुर हो कि सुनने वाले उसे सुनने के लिए लालायित रहें। स्वामी विद्यानन्द विदेह की वाणी उन्नीसवीं सदी का एक जीता जागता उदाहरण है उनकी मीठी वाणी-मधुर शहद जैसी वाणी के बल पर श्रोता उनकी आवाज सुनते ही दौड़े चले आते थे और शान्त चित्त होकर उन्हें सुनकर आनन्द विभोर हो उठते थे। इतना ही नहीं उनके मुख से दान की गई अपील से शीघ्र पैसों का अम्बार लग जाता था। ये है वाणी की मिठास। भगवान श्रीकृष्ण जी की बांसुरी का जादू और महात्मा आनन्द स्वामी की वाणी का जादू भी सर चढ़कर बोलता/गूँजता था।

६. **सुदिनत्वमह्नाम्**- हे नाथ! हमारा हर दिन शुभ हो और सुन्दर व्यतीत हो। आप दिनों में शोभनता को दीजिए। देखो! मानव जीवन का उद्देश्य धर्म-अर्थ-कर्म-मोक्ष आदि पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करना है। हमें इस ओर अग्रसर होना ही होगा, तभी हमारे हर दिन सुदिन हो सकेंगे अन्यथा हमें दुर्दिन ही देखने पड़ सकते हैं। हमें सदा पुरुषार्थ युक्त प्रार्थना करते हुये ही जीना है। आमतौर पर हम सभी 'अर्थ और काम' में ही वशीभूत सुखों की इच्छा रखते हुये उसी में डूब जाते हैं और जीवन यूँ ही तमाम हो जाता है। क्योंकि यह केवल भौतिक सुख है जो केवल क्षणिक अर्थात् पल भर के लिए है और उसे भोगते ही हम दु:ख के गर्त में फिर गिर जाते हैं, यही कड़वा सच है। 'देखो पुरुषार्थ और प्रार्थना' का चोली दामन का साथ है। **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समाः'** जीयो सौ वर्ष तक पर पुरुषार्थ करते हुए ही।

इस सम्पूर्ण सूक्त से यही 'भाव' बनते हैं कि वह प्रभु ही हमारे सभी शत्रुओं का संहार करते हैं। हम अकेले काम-क्रोधादि को जीत नहीं सकते। प्रभु ही हमारा बेड़ा पार करके हमें विजयी बनाते हैं। वह ही हमें उन सब कार्यों को पूर्ण करने में सक्षम बनाते हैं। सो हमें सदा उस एक ईश्वर/एक प्रभु/एक परमात्मा की ही उपासना करनी योग्य है- अन्य की कदापि भी नहीं।

उस प्रभु ने ही हमें साधन और पदार्थ बहुतायत में उपलब्ध कराये हैं, क्योंकि वह सदा देता ही रहता है और स्वयं उसका उपभोग नहीं करता यह उसका स्वभाविक गुण है। और ये सब हम लेते भी हैं- पर क्या हम उसे लेने बाद उसका (अर्थात् उस पदार्थ का) ठीक उपयोग कर पाते हैं?

१. हे नाथ! आप हमें हर कार्य में निपुणता प्रदान कीजिए। प्राप्त धनों के सदुपयोग के लिए हमें सद्बुद्धि प्रदान कीजिए।

२. सदा सुकर्मों से युक्त शरीर और निरोगी काया हो हमारी। हे प्रभो! अहिंसा द्वारा ही हमारे जीवनों में कीर्ति और यश प्रदान कीजिए।

३. हो जगत् वश में, ऐसी मीठी वाणी हो प्रभु मेरी।
परस्पर प्रेम और शालीनता की शक्ति ही सदा प्रदान कीजिए।।

४. हर दिन शुभ और सुदिन ही व्यतीत हो मेरा/हमारा यही प्रार्थना-याचना है प्रभो! आप सदा हमें पुरुषार्थ का ही 'ज्ञान' दीजिए।। हे नाथ........आप हमें...........

- जीवनलाल आर्य
आर्यसमाज अशोक विहार, दिल्ली

❑❑❑

आत्म निवेदन

वाम मार्ग की आहट

गत कुछ महीनों में इस देश के सर्वोच्च न्यायालय ने कुछ ऐसे निर्णय दिए हैं जो समानता और स्वतंत्रता के नाम पर समस्त नैतिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर, उच्छृंखलता की हद तक यौन आचरण के सन्दर्भ में व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने वाले प्रतीत होते हैं। **इन निर्णयों को देते समय वैदिक काल से सुस्थापित 'विवाह' नामक संस्कार की पवित्रता, इसके उद्देश्य तथा संतति निर्माण के द्वारा परिवार, समाज और राष्ट्र के सुसंगठन के क्रम में परिवार नामक संस्था के योगदान और महत्व को पूर्णतः विस्मृत कर दिया गया है।** हम मानते हैं कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश कानून के विषय में सर्वोच्च निर्वचन कर्त्ता हैं परन्तु इन निर्णयों को देते समय उन्होंने दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाज शास्त्री के रूप में भी स्वयं को सर्वोच्च मान लिया है, एवं तद्विषयक स्वयं का चिन्तन अपनी सर्वोच्च सत्ता के सहारे सम्पूर्ण समाज पर थोप दिया है। मीडिया द्वारा इन निर्णयों की प्रशंसा एवं तथाकथित प्रगतिशील वर्ग की सक्रिय सकारात्मक प्रतिक्रिया सम्पूर्ण भारतीय समाज के अभिमत का प्रतिनिधित्व नहीं करती, यह ध्रुव सत्य है। ऐसे विषयों में निर्णय केवल जनमत-संग्रह द्वारा लिए जाने चाहिए। यौन सम्बन्धों को भारतीय परम्परा में दो व्यक्तियों की अंतरंगता का आधार कभी नहीं माना गया है तभी तो विवाह के पश्चात् इस आदर्श की अनुपालना की अपेक्षा की गयी है कि **पति-पत्नी भी यौन सम्बन्ध तभी बनाएँ जब संतान उत्पत्ति की इच्छा हो।**

वैदिक संस्कृति के सर्वोच्च प्रवक्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट रूप से निर्देशित करते हैं कि- जब.... गर्भस्थिति का निश्चय हो जाय, तब से एक वर्ष पर्यन्त स्त्री-पुरुष का समागम कभी न होना चाहिए क्योंकि ऐसा न होने से संतान उत्तम और पुनः दूसरा संतान भी वैसा ही होता है, अन्यथा वीर्य व्यर्थ जाता, दोनों की आयु घट जाती और अनेक प्रकार के रोग होते हैं। (सत्यार्थप्रकाश- चतुर्थ समुल्लास)

सत्यार्थप्रकाश के इसी समुल्लास में वे लिखते हैं- **'विवाह वा नियोग संतानों ही के अर्थ किये जाते हैं, पशुवत कामक्रीड़ा के लिए नहीं।'** 'अब इस पर स्त्री और पुरुष को ध्यान रखना चाहिए कि वीर्य और रज को अमूल्य समझें। **जो कोई इस अमूल्य पदार्थ को परस्त्री, वेश्या वा दुष्ट पुरुषों के संग में खोते हैं वे महामूर्ख होते हैं।** क्योंकि जो किसान वा माली मूर्ख (बिना पढ़ा-लिखा) होकर भी अपने खेत वा वाटिका के बिना अन्यत्र बीज नहीं बोते। जो साधारण बीज और मूर्ख का ऐसा वर्तमान है, तो जो सर्वोत्तम मनुष्य शरीररूप वृक्ष के बीज को कुक्षेत्र में खोता है वह महामूर्ख कहाता है, क्योंकि उसका फल उसको नहीं मिलता।'(सत्यार्थप्रकाश- चतुर्थ समुल्लास)

भारतीय संस्कृति में एक पतिव्रत तथा एक पत्नीव्रत की महत्ता को माननीय न्यायाधीश समझ ही नहीं पाए। दयानन्द आगे लिखते हैं- 'जब विवाह होवे तब स्त्री के हाथ पुरुष और पुरुष के हाथ स्त्री बिक चुकी अर्थात् जो स्त्री और पुरुष के साथ हाव, भाव, नख से शिखाग्रपर्यन्त जो कुछ है,

वह वीर्यादि एक दूसरे के आधीन हो जाता है। स्त्री वा पुरुष प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार न करें। **इनमें बड़े अप्रियकारक व्यभिचार, वेश्या-परपुरुषगमनादि काम हैं इनको छोड़के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पति सदा प्रसन्न रहें।'** (सत्यार्थप्रकाश- चतुर्थ समुल्लास)

यहाँ संक्षेप में भारतीय ऋषियों के विचारों को इसलिए प्रस्तुत किया है कि दिन-रात 'निरोध' का प्रचार और उसको मुफ्त बाँटने वाले प्रशासक और उनके समर्थक तथाकथित बुद्धिजीवी इस 'दर्शन' को हृदयंगम कर सकें।

ईश्वरीय ज्ञान वेद के आधार पर 'धरती पर स्वर्ग' सजाने हेतु आर्यों ने उक्त भावनाओं से ओतप्रोत विवाह संस्कार और गृहस्थाश्रम का निर्माण किया। यह ध्यान में रखे बिना जो निर्णय होंगे वे भारतीय समाज के लिए घातक ही होंगे। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में विवाह के प्रयोजन को स्पष्ट लिखते हैं जो संसार की अन्य किसी विचारधारा में नहीं मिलता है। 'लिव-इन' का उत्तर भी यहीं मिल जाता है। वे, 'विवाह क्यों करना, क्योंकि स्त्री-पुरुष को बन्धन में पड़के बहुत संकोच करना और दुःख भोगना पड़ता है, इसलिए जिसके साथ जिसकी प्रीति हो तब तक वे मिले रहें, जब प्रीति छूट जाय तो छोड़ देवें', के उत्तर में लिखते हैं- **'यह पशु-पक्षियों का व्यवहार है, मनुष्यों का नहीं। जो मनुष्यों में विवाह का नियम न रहे, तो सब गृहाश्रम के अच्छे-अच्छे व्यवहार सब नष्ट-भ्रष्ट हो जायं।** कोई किसी की सेवा भी न करे। और महाव्यभिचार बढ़कर सब रोगी, निर्बल और अल्पायु होकर शीघ्र-शीघ्र मर जायँ। कोई किसी से भय वा लज्जा न करे। वृद्धावस्था में कोई किसी की सेवा भी न करे... .... कोई किसी के पदार्थों का स्वामी वा दायभागी भी न हो सके और न किसी का किसी पदार्थ पर दीर्घकाल पर्यन्त स्वत्व रहे, इत्यादि दोषों के निवारणार्थ विवाह ही होना सर्वथा योग्य है। (सत्यार्थप्रकाश- चतुर्थ समुल्लास)

आशा है 'लिव इन' तथा 'समलैंगिक विवाहों' के समर्थक विवाह के वास्तविक तात्पर्य और विवाह नामक संस्था को दोयम दर्जे पर डाल देने के दुष्परिणामों पर उक्त चिन्तन के प्रकाश में विचार कर सकेंगे तथा समाज को गलत दिशा देने से विरत रह, महापाप करने से बचेंगे।

आज के बुद्धिजीवी इस पर अन्यथा विचार भी कर सकते हैं कि 'ऐसा कभी संभव नहीं। ये केवल किताबी बातें हैं'। वस्तुतः दोष उनका नहीं है। ब्रह्मचर्य की आवश्यकता तथा इसके महत्त्व को उन्होंने कभी पढ़ा-सुना, देखा नहीं। इनकी सोच है कि शुक्रोदय-रजोदय के तुरन्त पश्चात् अगर किशोर-किशोरी यौनिक झुकाव रखते हैं तो वह नितान्त स्वाभाविक है और उसे

उचित शिक्षा द्वारा नियंत्रित कर ऊर्ध्वमुखी दिशा देना माता-पिता-आचार्य का परमावश्यक दायित्व न मानकर, इस तरफ से उदासीन हो जाना है क्योंकि यह भी अन्य क्षुधाओं के समान शारीरिक क्षुधा है और अन्य भूखों की भाँति इसका भी शमन होना चाहिए। क्यों मनीषियों ने मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को चार भागों में विभाजित कर काम-पूर्ति हेतु आयु का केवल चौथाई भाग रखा और उसमें भी संतानोत्पत्ति हेतु ही काम-सम्बन्ध बनाने का आदर्श रखा, (जैसा हमने ऊपर महर्षि दयानन्द को पढ़ा) आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में यह आज के विद्वान् के समझ में आने वाली बात नहीं है। हम यहाँ यह निवेदन करना चाहेंगे कि उपरोक्त चिन्तन गप्प-मात्र नहीं है। भगवान श्रीराम और भगवती सीता, श्री लक्ष्मण सहित

१४ वर्ष के लिए वन में गए। सीता जी का हरण तो अंतिम वर्ष में हुआ था अर्थात् तेरह वर्ष वे साथ ही रहे थे परन्तु काम सम्बन्धों की कहीं चर्चा भी नहीं। तीन लोग वन गए तीन ही लौटे। यहाँ लक्ष्मण की तपस्या तथा संयम की आज के उक्त विद्वान् किस प्रकार व्याख्या करेंगे? श्री राम के साथ तो उनकी पत्नी थी परन्तु अनिन्द्य सुन्दरी शूर्पनखां के प्रस्ताव के समय तो लक्ष्मण के साथ उर्मिला नहीं थीं। आज के विचारकों के अनुसार तो उन्हें 'लिव-इन' सम्बन्धों में रह लेना चाहिए था क्योंकि विवाहित परन्तु पत्नी से अलग रह रहे थे और तरुण लक्ष्मण में काम का होना स्वाभाविक था, सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति प्रस्ताव लिए खड़ी थी। सब कुछ स्वाभाविक था और नवीनतम व्याख्या के अनुसार यह एडलटरी (व्यभिचार) अर्थात् कोई अपराध तो था नहीं। परन्तु ये आधुनिक विचारक भूल जाते हैं कि लक्ष्मण फिर लक्ष्मण नहीं रहते जिनके उच्च चरित्र के बारे में महर्षि बाल्मीकि को लिखना पड़ा-

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।। - वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड ६/१२

सुग्रीव, जब माता सीता के आभूषण, जो कि उन्होंने अपने अपहरण के समय में यह सोचकर नीचे फैंक दिए थे कि उन आभूषणों से श्री राम को उनके संधान में सहायता मिलेगी, श्री राम को पहचान करने के लिए देते हैं तो श्री राम पहले उन्हें लक्ष्मण को दिखाते हैं, **तब लक्ष्मण का उक्त उत्तर आज के तथाकथित प्रकृतिवादियों की आँखें खोल देने वाला है।** लक्ष्मण कहते हैं कि मैंने माता सीता के मुखारविन्द को कभी गौर से नहीं देखा अतः मैं उनके कुण्डलों और बाजूबन्दों की पहचान नहीं कर सकता परन्तु मैं उनके नूपुरों की पहचान अवश्य कर सकता हूँ क्योंकि मैं अपनी माता समान भाभी के चरणों में प्रणाम नित्य करता था। क्या उदात्त आदर्श है।

यही नहीं राम लक्ष्मण तो फिर आर्य संस्कृति में पले-बढ़े थे परन्तु अरण्य संस्कृति में पले-बढ़े श्री हनुमान भी कहीं पीछे नहीं रहते। जब माता सीता को ढूढ़ते हुए वे रावण के रनिवास में/अंतःपुर में पहुँचते हैं तो अनेक स्त्रियाँ अस्त-व्यस्त कपड़ों में सोयी मिलतीं हैं। अंतःपुर से बाहर आकर हनुमान आत्मनिरीक्षण करते हैं कि इस दृश्य को देखकर कहीं उनके मन पर काम ने तो कब्जा नहीं कर लिया? तो यह है भारतीय संस्कृति का आदर्श।

वैदिक संस्कृति तथा सभ्यता केवल ख्याली पुलाव नहीं हैं यह सिद्ध करने हेतु भगवान श्रीकृष्ण का उदाहरण देते हैं। श्रीकृष्ण जी का विवाह देवी रुक्मिणी के साथ हुआ था। उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए विवाह पश्चात् भी १२ वर्ष तक वे ब्रह्मचारी ही रहे थे, उसके पश्चात् उन्होंने प्रद्युम्न के सामान तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किया। देखें-

ब्रह्मचर्यं महद् घोरं तीर्त्वा द्वादश वार्षिकम्, हिमवत्पार्श्वमास्थाय यो मया तपसार्जितः।
समानव्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत, सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः।। - सौप्तिक पर्व अध्याय १२, ३०-३१

वस्तुतः मानव मन का स्वभाव है कि वह विषयों की ओर भागता है। **इन विषयों में भी काम सर्वाधिक प्रबल है। महर्षि दयानन्द ने लिखा भी है-**

'यह बड़ा कठिन काम है कि जो काम के वेग को थांभ के इन्द्रियों को आप वश में रखना।' (सत्यार्थप्रकाश- तृतीय समुल्लास)

वस्तुतः विषयों से निपटने के दो प्रकार प्रचलित रहे हैं। प्रथम मान्यता के अनुसार विषयों में डूबकर ही सुख प्राप्त किया जा सकता है और ऐसा आनन्द ही उसका प्राप्तव्य है। कुछ लोग यह भी कह देते हैं कि भोगों का आधिक्य होने पर उनसे वैराग्य भी उत्पन्न होता है। भारत में चार्वाक आदि दार्शनिक ऐसी ही विचारधारा के समर्थक रहे हैं। **यह वाममार्ग जब-जब भी समाज में पनपा है इसने पतन के मार्ग को ही प्रशस्त किया है।** और जहाँ तक विषयों को भोगते-भोगते वैराग्य प्राप्ति की बात है तो भारतीय मनीषा का मानना है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।। - भतृहरि-वैराग्य शतकम्-१२

अतः 'काम' का सामना उसे नियंत्रित करके ही किया जा सकता है। 'काम' और 'लोभ' को मर्यादित करने हेतु काम-साधना तथा धनार्जन का अवसर आयु के केवल चौथाई भाग अर्थात् गृहस्थाश्रमी को दिया गया। उसमें भी मर्यादा कि काम का उपभोग संतानोत्पत्ति हेतु तथा धन का अर्जन सच्चाई के मार्ग पर चलकर पुरुषार्थ पूर्वक।

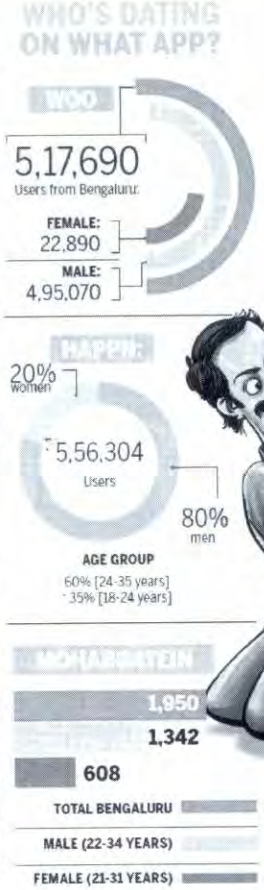

Gleeden, launched last year, has nearly 3 lakh subscribers from India; Bengaluru has taken to it well, with users in the 34-49 age group

- अन्तर्जाल से साभार

अर्जित का उपभोग भी अकेले नहीं करना है। 'त्यागपूर्वक उपभोग' वैदिक संस्कृति का ऐसा आदर्श है जो विश्व शान्ति की गारण्टी है। परन्तु आज का तथाकथित प्रगतिशील वर्ग ऐसा नहीं सोचता। वह केवल 'आकांक्षापूर्ति' ही जानता है। पुरुषार्थ चतुष्टय उसके लिए अजूबा है। इनके द्वारा ही फिल्में व टीवी सिरियलों का निर्माण होता है। मीडिया के माध्यम से ये ही 'पब्लिक ओपीनियन' के निर्माता बने हुए हैं। भारत के मन्दिरों में नग्न तथा संभोगरत मूर्तियों का संदर्भ दे वे स्थापित करना चाहते हैं कि मुगलों के आने के पूर्व भारतीय समाज में कामाभिव्यक्ति सहज व स्वाभाविक थी। परन्तु वे भूल जाते हैं कि एक भी मन्दिर २५०० वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। यह वही समय था जब भारत में वाममार्गीय सोच प्रवृत्त हुयी थी। यह भारत की सार्वकालिक सोच नहीं थी। अन्यथा भारतीय आर्य नरेश महाराजा अश्वपति यह क्योंकर कह पाते कि 'मेरे राज्य में कोई व्यभिचारी नहीं है तो व्यभिचारिणी स्त्री के होने का तो प्रश्न ही नहीं।' राष्ट्र को वाममार्ग की ओर अनेक प्रकार से धकेला जा रहा है। हमारी आशंका को प्रमाणित करने हेतु दो उदाहरण यहाँ पर्याप्त हैं। -

एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र के अनुसार अगस्त २०१७ में 'विवाहेतर सम्बन्ध' बनाने के इच्छुक स्त्री पुरुषों के लिए एक बेवसाईट लांच की गयी थी। भारत जैसे पारम्परिक मूल्यों से युक्त देश में मात्र एक वर्ष में इसके २.७ लाख से ऊपर यूजर केवल बंगलौर में हैं। ऐसी ही अन्य तीन और बेवसाईटों को भी मिला लें तो इनके 'यूजर' १५ लाख से ऊपर व्यक्ति हैं जिनमें २५ प्रतिशत महिलायें भी हैं।

दूसरा प्रमाण एक विज्ञापन है जो टीवी चैनलों पर 'प्यार किया तो डरना क्या' के नाम से प्रसारित किया जा रहा है। जहाँ महर्षि दयानन्द जैसे अपने समय के महान् दार्शनिक तथा समाज चिन्तक जोर देते हैं कि विवाह की सफलता के लिए आवश्यक है कि वर व कन्या के गुण-कर्म-स्वभाव तुल्य हों, समान हों। वे इसे इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट लिखते हैं- 'चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमारे रहें, परन्तु असदृश अर्थात परस्पर विरुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।' वहीं उपरोक्त प्रचार विज्ञापन में अनेक जोड़े दिखलाये जाते हैं- जिनमें एक जोड़े में दोनों की आयु ६० वर्ष से ऊपर प्रतीत होती है, एक में लड़के की आयु कम और महिला की आयु उससे कहीं अधिक दिखती है, एक में लड़के-लड़के की जोड़ी है, एक में अलग मजहब के सदस्य दिखते हैं आदि। इस प्रकार से चुन-चुनकर असदृश जोड़े जिनमें गुण-कर्म-स्वभाव में अन्तर होना साफ दिखायी देता है अथवा वानप्रस्थ की आयु में भी जोड़े बनाए जा रहे हैं, स्पष्ट ही इन सबका आधार केवल काम-पूर्ति है। क्या यह वाममार्ग की आहट नहीं है? **क्रमशः........**

- अशोक आर्य

☐☐☐

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

आर्यसमाज में प्रवेश पर स्वामी जी की भावाभिव्यक्ति

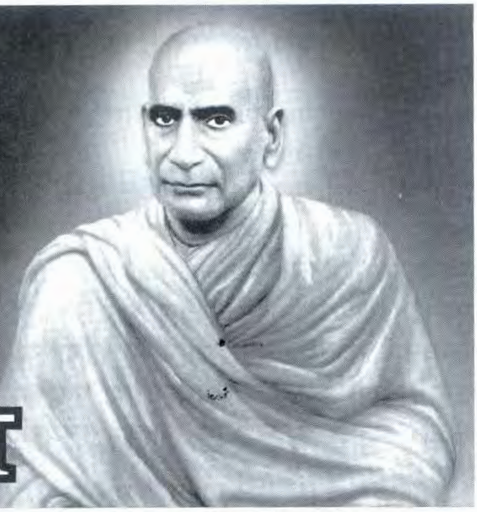

संवत् १९४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूँ। धर्म-विषयक गहरे आन्दोलन के पश्चात् सत्यार्थप्रकाश का पाठ दिन-रात आरम्भ कर चुका हूँ। अनारकली के पास रहमत खाँ के अहाते में एक तीन कमरे वाली कोठरी के बाईं ओर के कमरे में मैं प्रातः ६ बजे कुर्सी पर बैठा हूँ। सत्यार्थप्रकाश का आठवाँ समुल्लास सामने खुला पड़ा है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूँ। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचार निद्रा से जगा दिया। यह सुन्दरदास जी रावलपिण्डी की राजक्रान्ति के आन्दोलन में फंसे वकील लाला अमोलकराम के भाई आर्यजाति की उन्नति के दृढ़ पक्षपाती थे। सुन्दरदास जी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात् मेरा अधिक झुकाव ब्राह्मसमाज की ओर हो रहा है।

उन्होंने पूछा- 'किस चिन्ता में हैं, कहिए कुछ निश्चय हुआ?'

मेरी ओर से उत्तर मिला- **'पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने फैसला कर दिया, आज मैं सच्चे विश्वास से आर्यसमाज का सभासद् बन सकता हूँ।'** इस उत्तर ने सुन्दरदास जी के मुख की कान्ति को ऐसा उज्ज्वल कर दिया कि उसका तत्काल ही मुझ पर प्रभाव पड़ा। मैं अपने ४० वर्ष के आर्य सामाजिक जीवन में जब-जब किसी संशयात्मक व्यक्ति को संशयसागर के किनारे पर पहुँचाकर श्रद्धा और विश्वास की रमणीय वाटिका में विश्राम कराने का साधन बना हूँ तब कई बार मैंने इस प्रकार के आह्लाद का अपने अन्दर अनुभव किया है।

सुन्दरदास जी को हम सब 'भाई सुन्दरदास' कहते थे। यद्यपि उनके नाम के साथ इस शब्द का प्रयोग उनके मित्रों ने हँसी-दिल्लगी से किया था, किन्तु जिस प्रेम से वे अपने मित्रों की सेवा किया करते थे और जिस प्रकार का भ्रातृभाव उनके अन्तःकरण को पवित्र कर रहा था उनके बाह्य बर्ताव ने उन्हें सचमुच अपने मित्रों का भाई ही बना दिया था। भाई जी वहीं जम गये। मेरे स्थान में ही स्नानादि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर मुझे साथ ले आर्यसमाज की ओर चल दिये।

> **स्वामी जी की आत्मकथा को पढ़कर ज्ञात होता है कि उन्होंने आर्यसमाज को सहसा ही नहीं चुन लिया था। चिन्तन-मनन की दशा चलती रही। आर्यसमाज-प्रवेश का अन्तिम निर्णय जिस दिन स्वामी जी ने लिया, उससे ठीक पहले की मानसिक दशा का वर्णन स्वयं उन्होने इन पंक्तियों में किया है जो पाठकों को निश्चित रूपेण प्रेरणा देगी।** - सम्पादक

वैदिक वाङ्मय एक सामान्य परिचय (यजुर्वेद)

शिव नारायण उपाध्याय

सामान्य रूप में ऋग्वेद को ज्ञान काण्ड का तथा यजुर्वेद को कर्म काण्ड का ज्ञान प्रदान करने वाला कहा जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने यजुर्वेद के भाष्य से पूर्व भूमिका के रूप में इस प्रकार लिखा है-

'ईश्वर ने ऋग्वेद में गुण और गुणों के विज्ञान के प्रकाश के द्वारा सब पदार्थ सिद्ध किये हैं। मनुष्यों को पदार्थों से जिस जिस प्रकार यथायोग्य उपकार लेने के लिए क्रिया करनी चाहिए तथा उस क्रिया के जो-जो अंग वा साधन हैं सो-सो यजुर्वेद में प्रकाशित किये हैं क्योंकि जब तक क्रिया करने का दृढ़ ज्ञान न हो तब तक उस ज्ञान से श्रेष्ठ सुख कभी नहीं हो सकता और विज्ञान होने के ये हेतु हैं कि जो क्रिया प्रकाश अविद्या की निवृत्ति अधर्म में अप्रवृत्ति तथा धर्म और पुरुषार्थ का संयोग करना है। जो कर्म काण्ड है सो विज्ञान का निमित्त और जो विज्ञान काण्ड है सो क्रिया से फल देने वाला होता है।'

सभी संस्कारों में जो कर्म काण्ड किये जाते हैं उनमें यजुर्वेद के मंत्रों का ही विनियोग होता है।

विविध यज्ञों में यजुर्वेद के विभिन्न अध्यायों के मंत्र लिए जाते हैं। सामान्य ज्ञान के लिए इनका जानना वैसे उतना आवश्यक नहीं है फिर भी संक्षिप्ततम रूप में लिखा जा रहा है। पहले अध्याय को याज्ञिकों ने 'दशपूर्णमासेष्टि' वाला माना है। दूसरा अध्याय भी अन्तिम छः मंत्रों को, जिन्हें **'पिण्डपितृयज्ञ'** में नियुक्त किया गया है, छोड़कर 'दशपूर्णमासेष्टि' से ही सम्बन्धित हैं। तीसरे अध्याय में ६३ मंत्र हैं। याज्ञिकों के अनुसार मंत्र विभागीकरण निम्नानुसार है-

मंत्र	१ से ८	अग्न्यायेय
	९ से १०	अग्निहोत्र
	११ से ३६	बृहदुपस्थान
	३७ से ४३	क्षुल्लकोपस्थान
	४४ से ६३	चातुर्मास्य

चौथे अध्याय में ३७ मंत्र हैं। याज्ञिकों के अनुसार इस अध्याय से अग्निष्टोम यज्ञ का आरम्भ होता है जो आठवें अध्याय के ३२ वें मंत्र तक चलता है। आठवें अध्याय में ६३ मंत्र हैं। ३३ वें मंत्र से ५० वें मंत्र तक षोडशी, ५१ से ५३ तक सत्रोस्थान तथा ५४ से ६३ तक नैमित्तिक यज्ञ चलता है।

नवें अध्याय में ४० मंत्र हैं। मंत्रों का विनियोग इस प्रकार है- मंत्र १ से ३४ वाजपेय यज्ञ। ३५ से ४० तथा आगे अध्याय १० मंत्र ३० तक राजसूय यज्ञ। दसवें अध्याय में ३४ मंत्र हैं। मंत्र ३१-३४ तक चरक सौत्रामणी यज्ञ से सम्बन्धित हैं। ग्यारहवें अध्याय से अठारहवें अध्याय के अन्त तक अग्नि चयन मंत्र हैं। उन्नीसवें अध्याय में ६५ मंत्र हैं। इस अध्याय

से सौत्रामणी यज्ञ आरम्भ होता है जो इक्कीसवें अध्याय तक रहता है। बाइसवें अध्याय में भी सौत्रामणी याग जारी रहता है साथ ही अश्वमेध यज्ञ भी आरम्भ हो जाता है। वास्तव में दोनों २५ वें अध्याय तक साथ चलते रहते हैं। २६ वां अध्याय खिलाध्याय माना जाता है। आगे खिल भाग में अलग-अलग प्रकरण चलते हैं। २७ वाँ अध्याय पञ्चथितिकाग्नि प्रकरण, २८ वाँ अध्याय सौत्रामणी पशुयाग, २९ वाँ अध्याय अश्वमेधादिक प्रकरण, ३० वाँ, ३१ वाँ अध्याय पुरुषमेध, ३२ वाँ, ३३ वाँ अध्याय सर्वमेध, ३४ वाँ ब्रह्मयज्ञ एवं शिवसंकल्प, ३५ वाँ अध्याय पितृमेध तथा अध्याय ३६ से ३९ तक प्रवर्ग्य का भाग है।

चालीसवाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् के रूप में है।

यह तो याज्ञिकों की दृष्टि से एक विवेचन हुआ अब हम एक

सामान्य वेद अध्येता के रूप में विचार करते हैं। इस दृष्टि से अध्ययन करने पर लगता है कि यजुर्वेद भी ज्ञान की विविध विद्याओं से परिपूर्ण है। इसमें यज्ञ वा यज्ञ से मिलने वाले लाभ, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, मौसम विज्ञान, ऋतु विज्ञान, नीति शास्त्र, समाज शास्त्र, प्राणी विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, आदि अनेक विषयों पर गम्भीर चिन्तन हुआ है।

पहले अध्याय के पाचवें मंत्र में ही सत्य को जीवन में धारण करने एवं असत्य को त्यागने का व्रत लेने को कहा गया है-

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्ययुपैमि।

फिर दूसरे अध्याय के २१ वें मंत्र में कहा गया है कि वेद के जानने वाले परमेश्वर ने वेद विद्या प्रकाशित की है उस की उपासना तथा वेद विद्या को जानकर क्रिया काण्ड का अनुष्ठान करके सबका हित करो।

तीसरे अध्याय का ३५ वाँ मंत्र गायत्री मंत्र कहलाता है-

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही। धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस मंत्र द्वारा परमात्मा से श्रेष्ठ बुद्धि एवं ज्ञान की याचना की गई है ताकि उसके आधार श्रेष्ठ आचरण कर सकें। इसी अध्याय के ५५ वें मंत्र में पुनर्जन्म का विज्ञान है। चौथे अध्याय के २८ वें मंत्र में मनुष्यों को परस्पर किस तरह का व्यवहार करना चाहिए यह बताया गया है। पाँचवें अध्याय के ८ वें मंत्र में विद्युत उत्पादन कर उससे लाभ लेने को कहा गया है। छठे अध्याय में राजनीति की चर्चा है। सातवें अध्याय के मंत्र ३१ में कहा गया है कि अकेला मनुष्य राज शासन कार्य ठीक से नहीं कर सकता है। नवें अध्याय के मंत्र १७ का भावार्थ है कि जो ये राजपुरुष हम लोगों से कर लेते हैं वे निरन्तर हमारी रक्षा करें नहीं तो कर न लें और हम भी उनको कर न देवें। प्रजा की रक्षा और दुष्टों के दमन के लिए ही कर देना चाहिए।

इक्कीसवें मंत्र में कहा गया है कि मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य धर्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले पुरुष ही की प्रजा होओ अन्य किसी क्षुद्राशय पुरुष की प्रजा होना स्वीकार कभी मत करो। इन दो मंत्रों ने ही भारत के स्वाधीनता संग्राम को गति दी थी। दसवें अध्याय के दूसरे, तीसरे और चौथे मंत्रों में गणतंत्र का वर्णन है। इनमें राष्ट्राध्यक्ष का उम्मीदवार बार-बार कहता है- **'राष्ट्र दा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा'** फिर राष्ट्राध्यक्ष के लिए आवश्यक गुण क्या हैं? यह भी बताया गया है।

एकादश अध्याय में स्त्री-पुरुष को कैसे रहना चाहिए यह

बताया गया है साथ ही उन्हें जल में जल जैसे वैसे हृदय वाले बनने को कहा गया है। द्वादश अध्याय मंत्र ३५ में स्वंयवर विवाह करने की शिक्षा दी गयी है।

मंत्र ६७ से ७१ तक कृषि विज्ञान पर विज्ञान सम्मत चर्चा की गई है। फिर मंत्र ७५ से १०५ तक आयुर्वेद का वर्णन है।

तेरह, चौदह और पन्द्रहवें अध्याय में ऋतुओं का वर्णन है। १६ वें अध्याय में राजा के गुणों का वर्णन है। साथ ही समाज में नाना प्रकार से कार्य करने वाले श्रमिकों को उचित पारिश्रमिक देने की बात भी कही है।

१७ वें अध्याय में अंक गणित के विषय में बताया गया है। इसमें $१०^{१८}$ तक के अंकों की गणना व उनका नामांकन दिया गया है। अठाहरवें अध्याय में गणित की मूल विधाओं योग, ऋण, गुणा और भाग पर विस्तृत चर्चा की गई है।

उन्नीसवें अध्याय में पदार्थ विद्या पर चर्चा की गई है।

तीसवें मंत्र में व्रत की महिमा का वर्णन है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धायाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

३६ वें मंत्र से पितृ तर्पण का वर्णन है। यहाँ बारह प्रकार के पितृ गणों का सम्मान करने शिक्षा दी गई है। बीसवें अध्याय में चौदहवें मंत्र में कहा गया है कि जो कभी अकस्मात् भ्रान्ति से किसी विद्वान् का अनादर कोई करे तो उसी समय क्षमा करावे। आगे मंत्रों में नीति शास्त्र का वर्णन है। मंत्र ८४, ८५, ८६ में सरस्वती रूप में परमात्मा के गुणों को बताया गया है।

छब्बीसवें अध्याय मंत्र दूसरे में वेदाध्ययन का अधिकार सभी को दिया गया है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च।

अध्याय ३० के मंत्र ३ में दुर्गुणों को छोड़ने और सद्गुणों को ग्रहण करने को कहा गया है-

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्नऽआसुव।

यजुर्वेद के अध्याय ३२ व ३६ तो अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हैं। अध्याय ३२ मंत्र ३ में ईश्वर प्रतिमा होने का निषेध है।

'न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यश:।'

परमात्मा ही सृष्टिकर्त्ता है इसे छठे मंत्र में कहा गया है-

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाक:।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम।

चौतीसवें अध्याय के प्रारम्भ के छ: मंत्र शिवसंकल्प के हैं। इनमें प्रत्येक मंत्र के अन्त में **'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु'** आया है।

अध्याय ३६ मंत्र ९ में विविध नामों से ईश्वर की प्रार्थना है-

शन्नो मित्र: शं वरुण: शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्नऽइन्द्रो बृहस्पति: शन्नो विष्णुरुरुक्रम:।।

सत्रहवें मंत्र में शान्ति पाठ आया है जो अत्यन्त लोकप्रिय हो गया है। इसका पाठ सभी धर्मावलम्बी करते हैं। अठारहवें मंत्र में प्राणीमात्र को मित्र दृष्टि से देखने को कहा गया है-

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुमा समीक्षामहे।

२२ वें मंत्र में ईश्वर से निर्भयता की याचना की है-

यतो यत: समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु।
शं न: कुरु प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:।

चौबीसवें मंत्र में सौ वर्ष तक अदीन होकर जीने की प्रार्थना है-

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद: शतꣳशृणुयाम शरद:शतं प्र ब्रवाम शरद: शतमदीना: स्याम शरद: शतं भूयश्च शरद: शतात्।

सैंतीसवें अध्याय के बीसवें मंत्र में ईश्वर को ही अपना पिता, माता, भाई, रक्षक आदि माना गया है।

उन्चालीसवें अध्याय में अन्तिम संस्कार का वर्णन है।

चालीसवाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् के रूप में जाना जाता है। इस पर आगे अलग से लिखा जावेगा। इसी प्रकार यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय में पुरुष सूक्त है जिस पर विद्वान् जन लगातार लिखते ही रहते हैं। इसमें ईश्वर के विराट् स्वरूप के दर्शन के साथ ही सृष्टि-उत्पत्ति तथा वर्ण-व्यवस्था की स्थापना का वर्णन है।

- ७६, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)

□□□

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए
१५००० रु.

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

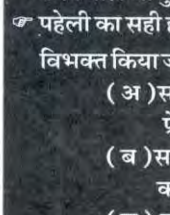

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

महाराज मनु ने कहा है-

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम्।।

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों से वेद विद्या का दान अतिश्रेष्ठ है इसलिए जितना बन सके उतना प्रयत्न तन, मन, धन से विद्या की वृद्धि में किया करें। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान होता है। - स.प्र. तृतीय समुल्लास

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेद विद्या विषय पर प्रकाश डाला है। समस्त दानों में वेद विद्या का दान सर्वोत्तम है। यही ऐसा मार्ग है जिससे व्यक्ति, समाज व देश की उन्नति संभव है और निश्चित भी है। यही नहीं वेद विद्या से ही विश्व का कल्याण हो सकता है।

हमारे मनीषियों ने हमें इतना सुगम मार्ग बता दिया फिर भी और पाश्चात्यीकरण को ही महत्व दे रहे हैं। हम आज भी शिक्षा के विषय में सुषुप्त हैं।

चारों ओर अपराध, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, दलाली, मिलावट, अनाचार, अत्याचार, पाश्चात्यीकरण, ईर्ष्या, द्वेष बढ़े हुए हैं। आज घरों में बड़ों वृद्धजनों का सम्मान नहीं होता। भाई-भाई में लड़ाई है। पिता-पुत्र तक में वैमनस्य है। मित्र-मित्र को धोखा दे रहा है। धन के लोभ में अपनों का ही गला काट रहे हैं। मद्यपान, धूम्रपान, दहेज-हत्या, दुश्चरित्रता सिर पर चढ़ कर बोल रहे हैं। सरकार अपराधों पर नियंत्रण हेतु सुरक्षा बल तो बढ़ा रही है परन्तु अपराध न हों उसकी ओर ध्यान नहीं है। अपराधों पर नियंत्रण केवल दो कार्यों से होगा और निश्चित होगा।

प्रथम तो मैकाले की पाश्चात्यीकरण की शिक्षा को अविलम्ब रोका जाए, जहाँ भारतीय संस्कृति की शिक्षा नहीं, नमस्ते करने पर भी रोक है, हिन्दी-संस्कृत के विषय भी नहीं हैं।

गुरुकुल शिक्षा की आवश्यकता

हम इस ज्ञान का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं। जानते हैं जब तक धरती पर वेद का प्रकाश रहा चहुँ ओर सुख, शान्ति व वैभव रहा और जब से वेद ज्ञान से हम दूर हुए सुख व शान्ति यहाँ तक कि वैभव भी हमसे छिन गया। यहाँ सिकन्दर ने ईसा से लगभग ३५० वर्ष पूर्व आक्रमण किया, वहखमनी शासकों के आक्रमण हुए, मुगल-तुर्क-पठानों ने आक्रमण किए, अंग्रेजों का शासन हुआ। हमारे लाखों भारतीयों ने स्वतंत्रता हेतु बलिदान किया। उन्नीस सौ सैंतालीस में स्वतंत्रता मिली परन्तु वह भी अधूरी ही मिली। भारत को कई भागों में बाँट दिया। पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान बन गए। अधूरी स्वतंत्रता ऐसे भी है कि भारत में हम अपनी शिक्षा जिससे हम उन्नतिशील थे 'गुरुकुल शिक्षा' से आज भी दूर हैं और मैकाले की कुटिल चाल के जाल में आज भी बँधे हैं हैलो, हाय, टाटा, बाय-बाय, मॉम-डेड की भावना बाल्यावस्था से ही भर दी जाती है, टाई, बैल्ट और हैपी बर्थ डे मनाने वाले ही आगे चलकर काकटेल रेस्तरां होटलों

डान्सबार पब में जाते हैं और अधिकारी बन कर भारतीय जनता से उसी प्रकार सम्बन्ध रखते हैं जैसे कि यह यहाँ से भगाए गए उन अंग्रेजों की सन्तान हों। क्योंकि लार्ड मैकाले

ने कहा था कि हम अंग्रेज यहाँ से चले भी जायेंगे तो ऐसा बीज बो जायेंगे कि यहाँ भारत की भूमि पर ही काले अंग्रेज उत्पन्न होने लगेंगे। यही पाश्चात्यीकरण की शिक्षा हमारे लिए अभिशाप है। हमें भाषाओं से परहेज नहीं। सभी ज्ञान-विज्ञान पढ़ना-पढ़ाना चाहिए जिससे संसार की उन्नति हो, सदाचार बढ़े, धर्म की भावना आए, ऐसा ज्ञान उचित है। **परन्तु वेद से दूर जाना यह मानवता के लिए अनुचित है। हमें वेद की शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए हिन्दी-संस्कृत पर ध्यान देना चाहिए।** चीन, जापान, रूस, वियतनाम, अमेरिका, इजराइल आदि में भी तो अपनी-अपनी भाषाओं में शिक्षा के विषय हैं जो कि उन्नतिशील व उन्नत देश हैं फिर हम क्यों फिरंगियों की भाषा की झूठी पत्तल चाट रहे हैं। यदि हम भारतीय हैं तो हमारी भाषा भी तो हिन्दी-संस्कृत होनी चाहिए। परिधान भारतीय हो, मुख्यतः धोती-कुर्ता हो।

दूसरी बात यह है कि हमें गुरुकुलों की ओर ध्यान देना चाहिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति मनुष्य को मनुष्य बनाती है, जहाँ कोई भेदभाव नहीं, ऊँच-नीच नहीं, छुआछूत नहीं, सदाचार, नैतिकता, आदर्श हैं, राष्ट्रभक्ति है, वेद विद्या का पठन-पाठन है, ईश्वर ज्ञान व उपासना तथा आयुर्वेद, धनुर्वेद, अथर्ववेद, गन्धर्ववेद की शिक्षा है, भौतिक, रसायन, जीव, वनस्पति, कृषि, भूगर्भ, वैदिक गणित, वैदिक ज्योतिष, अर्थशास्त्र आदि समस्त विषय हैं। इनके साथ आधुनिक विषयों का समन्वय होकर चारों ओर ज्ञान का प्रकाश ही होगा।

प्राचीन काल में ऋषि मुनि शास्त्रों के ज्ञानी थे। गुरुकुल व आश्रम थे। वहाँ से अश्वपति, भतृहरि, हरिश्चन्द्र, अर्जुन, कृष्ण जैसी महान् आत्माएँ शिक्षित हुईं। तक्षशिला-नालन्दा जैसी विश्वविद्यालय थे, चन्द्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य सम्राट, अशोक जैसे चक्रवर्ती शासक हुए। राम, लक्ष्मण, सीता, गार्गी, मदालसा को कौन नहीं जानता? यह समस्त महान् विद्वान् आत्माएँ गुरुकुलों की ही देन थीं। संक्षेप में इतना ही प्रकाश किया है हमारा इतिहास ज्ञान-विज्ञान से, विद्वानों, योद्धाओं, चक्रवर्ती शासकों के महान् धार्मिक कार्यों से भरा पड़ा है वे सब गुरुकुलों की शिक्षा के ही प्रकाश पुंज थे।

आइये! आज उस गुरुकुल शिक्षा का पुनः भारत की पवित्र धरा पर प्रकाश करें। नगर-ग्राम से दूर, कोलाहल से दूर, भारत का भविष्य बनायें। गुरुकुलों का निर्माण करें। गुरुकुलों को महत्व दें जिससे गुरुकुल के स्नातक ही शासन-प्रशासन राजनीति-व्यवस्था व समाज को नई दिशा दे सकें। संसार को श्रेष्ठ बनाएँ।

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह
चन्द्रलोक कॉलोनी, खुरजा

□□□

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१ ग	१	■	२ ■	२	न	■	३	३ ट्टी
■	४	४ र	४	४ ■	■	■	५	५	५ क
६	६ मि	६	■	७	वी	७	७	७ दा	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सृष्टि के पूर्व असत् के सदृश क्या था?
२. जगत् के कितने कारण हैं?
३. घड़े के निर्माण में उपादान कारण क्या है?
४. मुख्य निमित्त कारण कौन है?
५. प्रकरणस्थ वाक्य कैसे होते हैं?
६. जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने वह कारण क्या कहलाता है?
७. केवल परमेश्वर को ही जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान कौन मानते हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०/१८ का सही उत्तर

१. मंत्रद्रष्टा २. ज्ञान रहित ३. ब्राह्मण ग्रन्थ
४. प्रकाशक ५. वेद ६. व्याख्या ७. इतिहास

"विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०१९

गीता का कर्म सन्देश

गीता भारतीय जीवन-दर्शन और हमारे लोक व्यवहार को सरल भाषा में व्यक्त करने वाला अद्भुत ग्रन्थ है। महाभारत युद्ध के आरम्भ में कौरव-पाण्डवों की दोनों सेनाओं में अपने स्वजनों तथा गुरु द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह आदि को विपक्ष में देखकर अर्जुन युद्ध के प्रति सर्वथा हतोत्साहित हो जाता है एवं शस्त्र त्याग देता है। तब श्रीकृष्ण ने उसे वीर क्षत्रिय के रूप में उसके कर्त्तव्यों का बोध कराने के लिये गीता का उपदेश दिया, जिसका महत्व सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक है। कर्त्तव्य, धर्म तथा ईश्वर-प्राप्ति को जिस सरलता से गीता में दर्शाया गया है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। गीता का मूल स्रोत उपनिषद् माने गये हैं-

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

सारी उपनिषदें गायें हैं जिनके अमृतमय सारतत्व का दोहन करके उनके मर्म को श्रीकृष्ण ने गीता में अभिव्यक्त किया है। उपनिषद् आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं। इनमें हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के अध्ययन, गहन चिन्तन, ध्यान, तप, तत्त्वज्ञान एवं आत्मानुभूति की सुन्दर, सरल और गहन अभिव्यक्ति है। उपनिषद् में जीवन-पथ के प्रेयमार्ग और श्रेयमार्ग इन दो मार्गों का वर्णन है। प्रेयमार्ग हमारे सामान्य सांसारिक जीवन का मार्ग है तथा श्रेय मार्ग आत्म-कल्याण के लिये तप, त्याग एवं वैराग्य का कठिन पथ है। यह पथ तीक्ष्ण धार वाले छुरे की धार पर चलने के समान दुर्गम है-

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

- कठोपनिषद्

ऐसे कठिन मार्ग को गीता में निष्काम कर्मयोग के द्वारा सर्वजनसुलभ बना दिया गया है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध के लिये प्रेरित करते हुये अपने उपदेश के आरम्भ में गीता के अध्याय द्वितीय में आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म का प्रतिपादन करते हैं। सबके शरीरों में नित्य आत्मा का निवास है। यह आत्मा अजर, अमर है। शस्त्र, अग्नि या कोई भी शक्ति आत्मा का नाश नहीं करती। केवल शरीर मरता है आत्मा नहीं।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है एवं मरने वाले का पुनर्जन्म होता है। आत्मा की अमरता की स्पष्ट मीमांसा करने के पश्चात् जीवन में कर्म की महत्ता को समझाया है। अनासक्त भाव से सफलता एवं असफलता में विचलित हुए बिना अपने कर्त्तव्य कर्म को पूर्ण निष्ठा से करने का उपदेश दिया है।

कर्म की अनिवार्यता तथा आसक्ति विहीन कर्म करते हुए जीने का सूत्र ईशावास्योपनिषद् के द्वितीय मंत्र में है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

इस संसार में अपने कर्त्तव्य कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार से कर्म तुझ मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे।

गीता में श्रीकृष्ण ने इस संक्षिप्त सूत्र को अति विस्तार के साथ सरलता से समझाया है। कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है, उसकी प्रकृति है।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। - गीता

कोई भी मनुष्य किसी भी अवस्था में क्षणमात्र भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। शरीर की चेष्टाओं से नहीं तो वह मन के विचारों से कर्म में प्रवृत्त रहता है। इस कर्म से ही मनुष्य अधोगति को प्राप्त हो सकता है और कर्म के द्वारा ही सद्गति तथा मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। कर्म के साथ हमारे मानसिक भाव, हमारा चिन्तन और संकल्प कर्म को प्रेयमार्ग अथवा श्रेय मार्ग (आत्म कल्याण के मार्ग-मोक्ष मार्ग) की ओर ले जाता है।

गीता कहती है हमारा कर्म पर ही अधिकार है। हमारे पास बुद्धि और हाथ हैं। इनमें हम अपनी सम्पूर्ण निष्ठा, योग्यता

एवं कुशलता से कर्म करें। परिणाम की अपेक्षा नहीं करें। यह कर्म हमें आत्मा-परमात्मा के योग की सिद्धि की ओर ले जाता है, श्रेय-मार्ग हमारे आत्म-कल्याण के मार्ग पर ले जाता है। **योग: कर्मसुकौशलम्।** - गीता

योग-सिद्धि के लिये वन या पहाड़ों पर जाकर कठोर तप किये बिना ही अपने सामान्य जीवन में अपने कर्मों की शुद्धि से, अपने भावों की निर्मलता से, योगी बन सकते हैं। गीता कहती है-

ज्ञेय: स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।

संन्यासी, तपस्वी या साधु महात्मा वह है जो न किसी से द्वेष करता है और ना ही किसी से कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा रखता है। यह साधना सामान्य गृहस्थ जीवन में भी की जा सकती है। मार्ग बहुत सरल भी नहीं है। क्योंकि राग-द्वेष हमारे स्वभाव में हैं। यदि हम किसी के लिये कुछ करते हैं तो उससे कुछ पाने की अपेक्षा भी रखते हैं। यदि हमें प्रतिदान नहीं मिलता तो हम दुःखी होते हैं, मन में बुरे विचार आते हैं- कैसा कृतघ्न है यह व्यक्ति आदि। लेकिन यदि इन विचारों को न आने दें तो हम आनन्द मार्ग के, योगमार्ग के पथिक बन सकते हैं। जैसे मार्ग में किसी अन्धे को सहारा

देकर तीव्रगामी यातायात के बीच से सड़क पार करवाकर हम सहज भाव से बिना किसी अपेक्षा के चल देते हैं अथवा बस में स्वयं खड़े होकर किसी वृद्ध या अशक्त को बिठाते हैं तो मन में आह्लाद की अनुभूति होती है। इसी भाव से बिना किसी अपेक्षा से कार्य करने की प्रेरणा गीता ने दी है। इसी का हम अभ्यास करें, निरन्तर प्रयास करें यही गीता का सन्देश हैं-

कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

कर्मफल के प्रति अनासक्त तथा दुःख-सुख हानि-लाभ आदि विषमताओं में समभाव रखने वाले को गीता में स्थितप्रज्ञ कहा है।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थित धीर्मुनिरुच्यते।।

यह स्थितप्रज्ञ भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन्मुक्त है। गीता ने ईश्वर की आराधना अपने कर्त्तव्य-कर्म से करने का अभिनव सन्देश दिया है-

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं बिन्दती मानव:।।

जिस परमात्मा से सारा संसार चलायमान है। जो इस सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। इस परमात्मा की अपने कर्त्तव्य कर्म द्वारा पूजा-अर्चना करके अर्थात् अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा से पालन करके मनुष्य परम सिद्धि-आत्मकल्याण को प्राप्त कर सकता है। हम देशवासी सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिये गुरु करते हैं, मन्दिरों में हजारों रुपयों के चढ़ावे चढ़ाते हैं, देव प्रतिमाओं का दुग्ध, चन्दन, केसर आदि से अभिषेक करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर इन सबका आजीवन घोर विरोध किया। गीता में भी उपर्युक्त श्लोक में परमात्मा की आराधना का सरल स्वाभाविक मार्ग निर्दिष्ट किया गया है।

वर्तमान समय में देश में भ्रष्टाचार और अनाचार बढ़ रहे हैं। १५ अगस्त स्वाधीनता दिवस पर हमारे माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देशवासियों का आह्वान किया कि वे अपने बालकों को अनुशासन में रखें। हमें भ्रष्ट आचरण, रिश्वतखोरी व भेदभाव आदि से मुक्त होकर राष्ट्रीय चरित्र को निखारना है। हम अन्धविश्वासों से मुक्त होकर देश की समस्याओं पर विचार करें और अपनी कर्मभूमि पर आगे बढ़ें। हमारा कर्त्तव्य है देश से गरीबी और अनाचार को मिटायें। गरीबों की तथा अशक्त जनों की हम यथाशक्ति सहायता करें। किसानों को प्रश्रय दें जिससे वे आत्मदाह अथवा अपनी जमीन बेचने के लिये विवश न हों। **देशहित एवं मानव-कल्याण के लिये बिना किसी लोभ या आसक्ति के कार्य करते रहें।** हम जिस क्षेत्र में हों- चाहे मजदूर, किसान, सैनिक, शिक्षक, अभियन्ता, उद्योगपति या नेता-हमारा लक्ष्य अपने कार्य को पूर्ण कुशलता से करते हुए देश को आतंकियों से सुरक्षित एवं समृद्ध बनाना है। दुःख एवं दरिद्रता को दूर करके सबके सुख और ऐश्वर्य के लिए निरन्तर कार्य करना है। यही गीता का कर्म-सन्देश है।

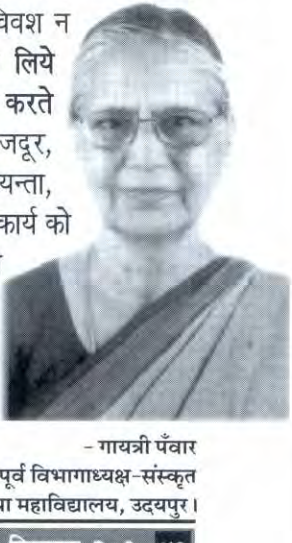

- गायत्री पँवार
पूर्व विभागाध्यक्ष-संस्कृत
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर।

❑❑❑

सोच ऊँची, नजर नीची हो

आज संसार में अनेक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक समस्याएँ हैं। आतंकवाद का दानव जबड़ा खोले सभी को निगलने को तैयार खड़ा है। लगभग सभी देश अपने लोगों को भूखा मारकर सामरिक शक्ति का विस्तार करने में लगे हैं। जितना इंसानियत का पतन आज हो रहा है उसके मुताबिक लोग संवेदनहीन हो गए हैं। आदमी-आदमी का दुश्मन हो गया है, अमीर गरीब का शोषण कर रहा है। राजनीतिज्ञ कुर्सी के भूखे हो रहे हैं। अपने विरोधियों को खड़े लाईन लगा रहे हैं। परिवारजनों, मित्रों तथा रिश्तेदारों में अपनापन नाम की कोई चीज नहीं दिखाई देती। किसी को समझ में नहीं आता कि कल का क्या होगा।

इन सब समस्याओं का इलाज हम सबके पास है और वह है कि साधारण जीवन व्यतीत करना। अपनी आवश्यकताओं को कम करना। दूसरों की तड़क-भड़क देखकर भ्रमित नहीं होना। आज का मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाता जा रहा है, सहूलियतों के नाम पर उसे ज्यादा पैसे की जरूरत पड़ती है। कमाने के लिए उसे तथा उसके परिवारजनों को रात-दिन मशक्कत करनी पड़ती है। कहीं कोई दिक्कत आती है, सभी एक दूसरे को दोष देते हैं। ज्यादा कमाने/पैसा इकट्ठे करने के लालच में रिश्वत का सहारा लेना पड़ता है, उल्टे-सीधे

हथकण्डे अपनाने पड़ते हैं। घर की बहू/बेटिओं को भी काम करना पड़ता है। घर के बुजुर्ग, बच्चे तथा अन्य परिवारजनों की देखभाल नहीं हो पाती।

बेशक घर की औरतें पैसा कमा कर ले आयें, घर के बच्चों की परवरिश तथा घर का काम नौकरों के सहारे छोड़ना पड़ता है, बच्चे जिद्दी, ढीठ, क्रोधी, अपराधिक प्रवृत्ति वाले तथा चोर प्रवृत्ति के बनने की संभावना बढ़ जाती है। आज हमारे समाज में भौतिकवाद का अघोषित युद्ध चल रहा है। सभी लोग अपना बंगला, गाड़ी, बढ़िया कपड़े, ज्वैलरी, पार्टियों में जाना, देश-विदेश के महंगे टूरिस्ट प्लेसों में जाकर शेखी मारने में लगे हैं। विवाह शादियों पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं। समाज के निम्न वर्ग के लोग भी इनकी नकल करने में लगे हैं। सवाल यह है कि इन सब बातों के लिए पैसा कहाँ से लायें। बात साफ है कि ईमानदारी से तो दोनों टाईम की रोटी कमाना भी मुश्किल है। या तो रात-दिन घर के सभी सदस्यों को जान मारकर काम करना होगा या फिर पाप, झूठ, पाखण्ड, हेराफेरी, चोरी, वेश्यावृत्ति, रिश्वत, करों में चोरी, उत्पादन में मिलावट, पैसे लेकर हिंसा फैलाना, आतंकवादी घटनाओं को बढ़ावा देने के लिए पैसे लेना, सरकारी/सुरक्षा जैसे सम्बन्धित सूचना को गैर कानूनी तौर पर शत्रु पक्ष को देकर पैसा कमाना आदि कोई तरीका अपनाना पड़ेगा। हमारे समाज में जिसके पास जितना पैसा ज्यादा है, वह अपने सगे सम्बन्धियों से उतना दूर है। पैसे वाले लोगों की ही आपस में दोस्ती, रिश्तेदारी तथा भाईचारा होता है-

जब जर होता है पास, तो सब रिश्तेदार बन जाते हैं।
टूट जाता है गरीबी में, जो रिश्ता खास होता है।

अधिकांश मामलों में लोग 'पैसा, पैसा और हाय पैसा' के चक्र में फंसे हैं। रात-दिन पैसे के चक्र में फंस कर ना उन्हें

मन की शान्ति है, ना सो पाते हैं, ना खा पाते हैं, नैतिकता को भी कई बार तिलांजलि देनी पड़ती है। कई बीमारियाँ लग जाती हैं, परिवारजनों के साथ चैन से बैठकर बातचीत तथा

खाना भी नहीं खा पाते, कई-कई दिन घर नहीं आते। सारी बातचीत इन्टरनेट/वीडियो कॉलिंग/वाट्सएप पर हो जाती हैं। कितने पैसे की जरूरत होगी, उन्हें पता नहीं। धर्म, कर्म से उन्हें कोई वास्ता नहीं। दिखावे के लिए दान/पुण्य करके झूठी शोहरत जरूर कमा लेते हैं। इतने सारे के बावजूद भी उन्हें जिन्दगी में सकून,शान्ति, सन्तुष्टि, तृप्ति, संतोष, चैन नसीब नहीं होता। उनसे सम्बन्धित अधिकांश लोग उनसे ईर्ष्या/घृणा करते हैं। उनकी स्थिति मईदास जैसी हो जाती है। उन्हें कोई दिल से प्यार नहीं करता, उन्हें भी सिर्फ पैसे से प्यार होता है। जब हम गरीब थे इच्छा कम थी, बहुत सुखी थे लेकिन आज बेशक सुख के सभी साधन हैं हमारे पास, लेकिन कोई भी सुख नहीं। कई लोगों का भ्रम है कि इच्छाएँ कम होने से विकास धीमा पड़ जायेगा। लेकिन ऐसा होना जरूरी नहीं। जीवन की गुणवत्ता सुधर जायेगी।

आज अधिकांश देश जो तथाकथित विकास की अंधी दौड़ में लगे हैं वह उन्हें असल में विनाश की तरफ ले जा रहा है। हम जितना भी सुख सुविधाएँ जुटा रहे हैं उनसे सच्चा सुख तो हमें मिल नहीं रहा। हाँ हमें ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, आपसी वैर भावना, परमाणु युद्ध का खतरा अपनी संस्कृति को क्षति तथा पश्चिमी संस्कृति की गन्दगी, आतंकवाद की आग, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, काम वासना, लालच, आदेश, उत्तेजना में वृद्धि आदि के तोहफे जरूर भरपूर मात्रा में मिल रहे हैं। लगभग सभी देशों में जो राजनीतिक अस्थिरता, प्रदर्शन, खून खराबा, देशद्रोह आदि की बातें देखने को मिलती हैं उनके पीछे किसी ना किसी तरह से हमारी इच्छाओं का बेलगाम होना है। अपनी इच्छाओं में अनियंत्रित वृद्धि के कारण मनुष्य ने इस स्वर्गरूपी धरती को तो नर्क बना ही दिया, अब वह चन्द्रमा, मंगल ग्रह आदि पर भी अपनी और इच्छाओं की पूर्ति के लिए उड़ान भर रहा है। बात साफ है कि मनुष्य ने स्वार्थी बनकर जब कभी भी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ की, परिणाम रहा सर्वनाश। पूछा जा सकता है कि क्या हम अपनी इच्छाओं में इस कदर बढ़ोतरी करके क्षणिक झूठा सुख माँगने के लिए यह सब होने दे सकते हैं?

मेरा मानना है कि तन ढांकने के लिए कपड़े मिल जायें, खाने के लिए रोटी तथा पीने के लिए स्वच्छ तथा आवश्यक पानी, रहने के लिए घर मिल जाये। आदमी ईमानदारी, मेहनत तथा लगन से रोजगार प्राप्त करे और अपने परिवार तथा सगे सम्बन्धियों के साथ सुख, चैन, शान्ति से परमात्मा के गुणगान करता हुआ रहे तो इससे बढ़कर कोई जिन्दगी नहीं। मेरा मानना है कि साधारण जीवन व्यतीत करने के लिए हेराफेरी, चोरी-चकारी, झूठ, पाखण्ड, अनैतिकता के आचरण की कोई जरूरत नहीं। ज्यादा इच्छाएँ पाप की तरफ ले जाती हैं। इनकी अधिकता से इहलोक तथा परलोक बिगड़ता है। आदमी की इच्छाएँ कम तथा विचार ऊँचे होने चाहिए। *We should have low living, but high thinking.* आदमी के विचारों में सीधापन, सादापन, नैतिकता, परमात्मा में विश्वास, परहित, ईमानदारी, परिवार तथा समाज के प्रति कर्तव्यपरायणता, सात्विक जीवन के प्रति आस्था, इस संसार की रचना करने वाले के न्याय में अटूट विश्वास होना चाहिए। आदमी जिसका नमक खाये उसके साथ कभी भी गद्दारी ना करे। जिस थाली में खाये उसमें छेद करें तो हम नर्क के अधिकारी ही बनेंगे। आदमी को काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार पर नियंत्रण करने की कोशिश करनी चाहिए। यथासंभव ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। दूसरे की माँ, बहन तथा बेटी को अपनी बेटी तथा दूसरे के धन को मिट्टी का ढेला समझना चाहिए। सिर्फ अपने शरीर के पोषण में ही नहीं बल्कि आत्मा को भी स्वच्छ, निर्मल तथा सुन्दर बनाना चाहिए। हमें पड़ौसी धर्म निभाना चाहिए। दया भावना हमारे गहने हैं। एक बार अपनी इच्छाओं में कटौती करके उच्च विचारों का अनुगमन करके देखो, जीवन संवर जायेगा। जीने लायक हो जायेगा। किसी का भला करके देखो, सुकून मिलेगा, आनन्द आयेगा।

- प्रो.शामलाल कौशल
मकान नं. ९७५-बी/२०, राजीव निवास
शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक- १२४००१

❑❑❑

क्रान्ति पथ का राही

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल

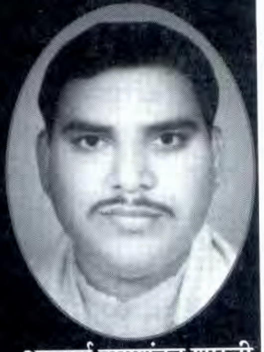

आचार्य उमाशंकर शास्त्री

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म १८६७ में हुआ। बिस्मिल की आत्म कथानुसार ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत् १६५४ में उनका जन्म हुआ। रामप्रसाद बिस्मिल का पालन बड़े कठोर सनातनी वातावरण में हुआ। सात वर्ष की आयु में पंडित रामप्रसाद का विद्यारम्भ हुआ। पिताश्री इस मामले में उनके साथ सख्ती बरतते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि बिना उच्च शिक्षा पाये व्यक्ति की उन्नति संभव नहीं है। किन्तु रामप्रसाद बिस्मिल बचपन से अतीव उद्दण्ड एवं शरारती थे इस कारण उनकी पढ़ाई अच्छी नहीं चली। १३-१४ वर्ष की आयु तक उन्होंने चौथी कक्षा ही पास की। कुछ बुरी आदतों जैसे भांग, सिगरेट का सेवन, चोरी आदि, में फंस जाने के कारण उनका पढ़ाई की ओर कम ध्यान था। वे दो वर्ष तक मिडल कक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सके किन्तु आर्य समाज के प्रभाव एवं एक आर्यसमाजी संन्यासी के सम्पर्क में आने पर उनके जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुआ। उनका नाम स्वामी सोमदेव था। उन्हें वे गुरुदेव कहते थे।

स्वामी जी के सत्संग से उन्हें आर्यसमाज और देशभक्ति की नई प्रेरणा मिली। इससे उनकी जीवन-धारा की दिशा बदल गई। उस समय आर्यसमाज धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध विद्रोह का प्रतीक था। सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में अग्रणी था। चरित्र की शुद्धता पर बड़ा बल देता था। **महर्षि दयानन्द के ब्रह्मचर्य के आदर्श ने भी बिस्मिल पर गहरा प्रभाव डाला।** उससे उन्हें भांग आदि मादक द्रव्यों के सेवन तथा दुर्व्यसनों से मुक्ति मिली। उनके स्वास्थ्य में विलक्षण सुधार हुआ। **वे आर्य समाज के सभी कार्यों में उत्साह से भाग लेने लगे। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य धारण किया और देशसेवा करने का निश्चय किया।** स्वामी सोमदेव रामप्रसाद को निरन्तर धार्मिक और राजनीतिक उपदेश देते थे।

श्री बिस्मिल ने अंग्रेजी के नौवीं दर्जे में आते ही स्वदेशी आन्दोलन सम्बन्धी कुछ पुस्तकें पढ़ीं। इनसे उन्हें पता चला कि देशवासियों की हालत कितनी बुरी है। इसके लिए एकमात्र जिम्मेदार अंग्रेजी सरकार है जिसे बदलने की सख्त जरूरत है। इसी समय आर्यसमाज से सम्बद्ध एक अन्य नेता की घटना का रामप्रसाद के युवा मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने ब्रिटिश राज्य के उन्मूलन को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। यह घटना भाई परमानन्द के प्राणदण्ड की थी।

अपनी आत्मकथा में इसका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है- सन् १६१५ में लाहौर षड्यंत्र का मामला चला। मैं समाचार पत्रों में उसका वृतान्त बड़े चाव से पढ़ा करता था।

श्रीयुत् भाई परमानन्द जी में मेरी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उनकी लिखी हुई 'तवारीखे हिन्द' पढ़कर मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। लाहौर षड्यंत्र केस का फैसला अखबारों में छपा। भाई परमानन्द को फांसी की सजा पढ़कर मेरे शरीर में आग लग गई। मैंने विचारा कि अंग्रेज बड़े अत्याचारी हैं इनके राज्य में न्याय नहीं है जो इतने बड़े महानुभाव को फांसी का हुक्म दे दिया.....। मैंने प्रतिज्ञा की कि इसका बदला अवश्य लूँगा। जीवनभर अंग्रेजी राज्य को विध्वंस करने का प्रयत्न करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने के बाद मैं स्वामी जी के पास आया। सब समाचार सुनाए और अखबार दिया। अखबार पढ़कर स्वामी जी बड़े दुःखी हुए। तब मैंने अपनी प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में कहा। स्वामी जी कहने लगे प्रतिज्ञा करना सरल है किन्तु उस पर दृढ़ रहना कठिन है। मैंने स्वामी जी को प्रणाम कर उत्तर दिया कि यदि श्री चरणों की कृपा बनी रहे तो प्रतिज्ञा पूर्ति में किसी प्रकार

की त्रुटि न करूँगा। उसी दिन से मेरे क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात हुआ।

प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ हो गया था। भारतीय जनता पर अंग्रेज शासकों के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे। विद्यार्थी रामप्रसाद इसे सहन नहीं कर सके। आपके शान्त सरल हृदय में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। रामप्रसाद बिस्मिल अंग्रेजी सत्ता के प्रबल शत्रु बनकर उसके विरुद्ध मोर्चा लेने की योजनाओं में लग गए। लक्ष्य निर्धारित हो गया.... मार्ग ढूढ़ना था। सौभाग्य से आपकी भेंट मैनपुरी के क्रान्तिकारी नेता गेंदालाल दीक्षित से हो गई। फिर क्या था? बिस्मिल का वास्तविक क्रान्तिकारी जीवन यहाँ से प्रारम्भ हो गया और उन्होंने संकल्प किया।

रहते करोड़ों पुत्र के, जननी दुखित होगी नहीं।
उद्धार हो तब देश का, इस क्लेश कारागार से।
भयभीत तब होंगे नहीं, हम जेल से, तलवार से।
रहते हुए तन प्राण, रण में मुख न मोड़ेंगे कभी।
जंजीर की झंकार में, शुभ गीत गाते जायेंगे।
तलवार के आघात में निज जय मनाते जायेंगे।
हे ईश ! भारतवर्ष में शतबार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

कितना अधिक था बिस्मिल के अन्दर आत्मविश्वास?

एवं कितनी अधिक थी देश पर मर मिटने की ललक? किसी प्रश्न पर निर्णय लेते समय रामप्रसाद धीरता और वीरता से काम लेते थे। एक बार स्टेशन पर उतरते समय कुली के हाथ से रिवाल्वर तथा कारतूसों का बक्सा गिर गया और उसमें रखा सामान चारों ओर बिखर गया। वे डरे नहीं अपितु उच्च्व अधिकारी के स्वर में कुली को डांटा। रेलवे पुलिस के सिपाही तनिक भी सन्देह नहीं कर सके और आप एक महान् संकट से बच गए।

रामप्रसाद बिस्मिल ने असाधारण संगठन शक्ति, सूझबूझ, त्याग, दृढ़ता आदि गुणों के कारण देश की क्रान्तिकारी पार्टी में शीघ्र ही अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। काकोरी रेल डकैती योजना का नेतृत्व आपको दिया जाना आपके इन्हीं गुणों का द्योतक है। क्रान्तिकारी कार्यों के लिए शस्त्रों की आवश्यकता..... शस्त्र खरीदने के लिए धन की आवश्यकता..... ने सरकारी खजाना लूटने की योजना बनवा दी। ९ अगस्त सन् १९२५ का संध्याकाल..... लखनऊ से हरदोई आने वाली ६ डाउन पैसेन्जर रेल..... काकोरी-आलमनगर के बीच का स्थान..... यकायक रेल की जंजीर खींच दी गई। रेल रुकते ही क्रान्तिकारी नवयुवक उतर कर रेल की दोनों बगल हवाई गोलियाँ चलाने लगे और जनता को सचेत करने लगे- आप सभी मुसाफिर अपनी सीटों पर बैठे रहें। आप लोगों में से हम किसी को किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाना नहीं चाहते। हमें देशहित के लिए सरकारी खजाना लूटना है।

एक क्रान्तिकारी ने गार्ड को सीधे लेट जाने का आदेश दिया। इसी बीच एक आदमी बाहर निकल ही रहा था कि उसे मौत के घाट उतार दिया गया। दूसरी पटरी से एक मेल रेलगाड़ी गुजर गई। रेल में बैठे सशस्त्र सैनिक चुपचाप बैठे रहे और सरकारी खजाना सफलतापूर्वक लूट लिया गया। इस सनसनीखेज डकैती में भाग लेने वाले थे रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, सचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, चन्द्रशेखर आजाद, मुरारीलाल

शर्मा, केशवचन्द्र चक्रवर्ती तथा बनवारी लाल। बनवारी लाल बाद में सरकारी गवाह बन गया।

काकोरी रेल डकैती काण्ड ने सरकार की आँखें खोल दीं। देश के विभिन्न भागों से ४३ गिरफ्तारियाँ की गईं। बिस्मिल भी लौह के सीखचों में पकड़कर बन्द कर दिए गए। समस्त हथियार तथा शस्त्रादि भी पकड़े गए। केवल आजाद को ही सरकार गिरफ्तार करने में असफल रही।

इस ऐतिहासिक मुकदमे में २५० सरकारी गवाह पेश हुए तथा सरकार के लगभग पाँच लाख रुपये व्यय हुए। सरकारी पक्ष की पैरवी करने वाले जगतनारायण तथा क्रान्तिकारियों की ओर से पैरवी करने वाले श्री गोविन्द वल्लभ पंत, अजीत प्रसाद जैन, चन्द्रभानु गुप्त तथा मोहन लाल सक्सेना के नाम उल्लेखनीय हैं। न्याय तथा लोकतंत्र का ढोंग रचने वाली अंग्रेज सरकार ने आखिर में वही निर्णय लिया- रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी।

रामप्रसाद बिस्मिल को जिला जेल गोरखपुर में रखा गया था। बिस्मिल ने आर्य समाजी होने के बावजूद अशफाक उल्ला खाँ को अपना परममित्र और अभिन्न साथी माना और उन्हें भारतीय स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान होने के लिए

प्रेरित किया। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खाँ की मैत्री भारत माता के दो पुत्रों (हिन्दू और मुस्लिम) का एक साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने की बेमिसाल घटना है। उस समय भारतीय स्वतंत्रता के लिए शहीद होने वाले अशफाक उल्ला खाँ प्रथम मुसलमान थे। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी के अतिरिक्त एक अच्छे शायर थे। मुकदमे के दौरान जब अभियुक्त जेलों से सरकारी संरक्षण में अदालत ले जाये जाते थे तो उनके मस्ती भरे गीत की पंक्तियाँ देखिये।

भारत न अब रहेगा, हरगिज गुलाम खाना।
आजाद होगा-होगा, आया है वो जमाना।
हम भेड़ और बकरी, बनकर न रह सकेंगे,
कर देंगे जालिमों का, सब बन्द जुल्म ढाना।
अब जेल की यहाँ पर, परवाह ही किसे है ?
इक खेल हो रहा है, फांसी पे झूल जाना।

रामप्रसाद बिस्मिल पर गोरखपुर जेल में लगभग डेढ़ वर्षों तक मुकदमा चला। और न्याय का ढोंग रचा गया। फांसी के कुछ दिन पूर्व आपने अपने एक मित्र को पत्र लिखा। १६ तारीख को जो कुछ होने वाला है उसके लिए मैं अच्छी तरह तैयार हूँ। वह है ही क्या? शरीर का बदलना मात्र है। मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन संतति के लिए शीघ्र ही फिर लौट आयेगी।

बिस्मिल को फांसी पर लटकाये जाने का मनहूस दिन निकट आता जा रहा था। फांसी के तख्त पर चढ़ने से पूर्व पंडित रामप्रसाद ने कई कविताएँ लिखीं जिनसे हम बिस्मिल की बलिदान भावना की अनुभूति कर सकते हैं।

आत्मकथा का आरम्भ इन पंक्तियों से-

क्या ही लज्जत है कि, रग-रग में यह आती है सदा,
दमन ले तलवार जब तक, जान बिस्मिल में रहे।

और अंत इन पंक्तियों से-

यदि देश हित मरना पड़े, मुझे सहस्रों बार भी।
तो भी न इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊँ कभी।
हे ईश। भारत वर्ष में, शतबार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का, देशोपकारक कर्म हो।

फांसी पड़ने से कुछ ही समय पूर्व लिखी नज्म क्या बोलती है?

दिल फिदा करते हैं, कुरबान जिगर करते हैं,
पास सिर बाकी है, माता की नजैर करते हैं।
खान ये वीरान कहाँ, देखिये घर करते हैं,
खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर करते हैं।
अब तो जाके आबाद करेंगे, किसी वीरान को।

१६ दिसम्बर १९२७ को प्रातः ६.०० बजे का समय। रामप्रसाद बिस्मिल ने 'वन्देमातरम' और 'भारत माता की जय' का उद्‌घोष करते हुए प्रसन्नता से फांसी के फन्दे का आलिंगन कर लिया। गोरखपुर की जनता ने इस अमर शहीद के पार्थिव शरीर को नगर में घुमाया। श्रद्धापूर्वक नेत्रों से अन्त्येष्टि क्रिया की।

रामप्रसाद बिस्मिल की शहादत भारतीय युवकों को युगों-युगों तक प्रेरणा देती रहेगी।

- प्राचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल मन्दिर
तेघड़ा, बेगूसराय (बिहार) -८५११३९
चलभाष- ९९०५४१६८९९

□□□

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सबसे बड़ा पुण्य है परहित,
परहित है तीरथ-धाम।
परहित में जब प्रेम बढ़े तो,
जग में होता नाम।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़

'राजा महेन्द्र प्रताप' के देशकी आजादी के बलिदान के कुछ विलुप्त प्रसंग

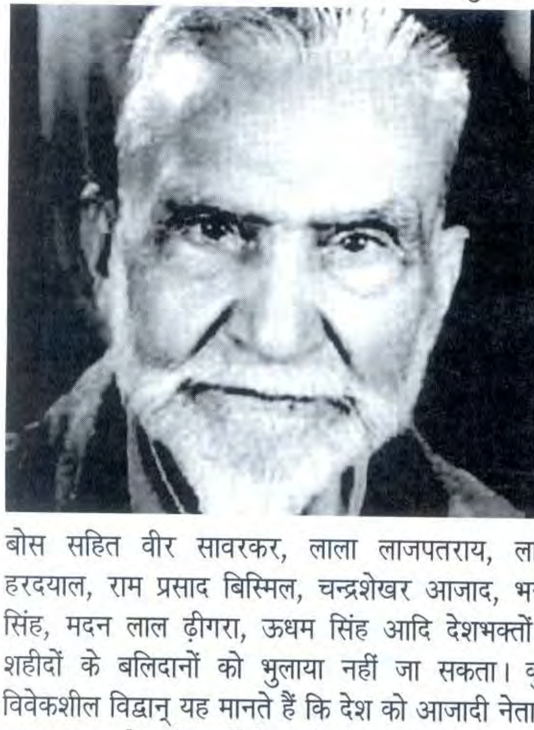

मनमोहन कुमार आर्य

देश को आजाद कराने में अनेक देशभक्त वीरों ने अपना जीवन बलिदान किया है। इन बलिदानी वीरों के परिवारों ने भी किसी से कोई कम बलिदान नहीं किये हैं। उनकी ओर प्रायः किसी का ध्यान ही नहीं जाता। प्रस्तुत लेख में राजा महेन्द्र प्रताप जी व उनकी धर्मपत्नी के बीच संवाद से उसका कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। देश की आजादी के बाद देश के कर्णधारों ने जनता को यह बताया कि देश अहिंसा से आजाद हुआ है। बहुत से विवेकशील लोग इसे सत्य नहीं मानते। हमने आज ही एक अधिकारी व्यक्ति जनरल बख्शी के श्रीमुख से सुना कि नेता जी की आजाद हिन्द फौज के ७० हजार सिपाहियों में से २६ हजार को अपनी शहादत देनी पड़ी थी। सन् १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य आन्दोलन में भी हजारों व लाखों लोगों का बलिदान हुआ था। आजादी के आन्दोलन में पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा व नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सहित वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, मदन लाल ढ़ीगरा, ऊधम सिंह आदि देशभक्तों व शहीदों के बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता। कुछ विवेकशील विद्वान् यह मानते हैं कि देश को आजादी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के कार्यों से मिली थी। यदि यह क्रान्तिकारी अंग्रेजों को चुनौती न देते और उन्हें इनसे जानमाल का डर न होता तो वह भारत को कभी आजाद न करते। आर्यसमाज के विद्वान् प्रा. अनूप सिंह जी भी अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि देश को आजादी अहिंसा से नहीं खून देकर मिली थी। क्रान्तिकारी बलिदानियों की परम्परा में एक बलिदानी थे राजा महेन्द्र प्रताप। इनके जीवन की घटनाओं का विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है। हमें ऋषि दयानन्द भक्त आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री जी की पुस्तक 'भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में आर्यसमाज का योगदान' से जो संक्षिप्त विवरण मिला है, उसे हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

देश की स्वाधीनता के आन्दोलन में पदार्पण कर उसके लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले देशभक्त आर्यवीरों में राजा महेन्द्र प्रताप का नाम आता है। राजा जी को अपना राजनैतिक तथा स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग निर्धारण करने में आर्यसमाज का वातावरण तथा विचारधारा ही सहायक रही ।

आर्यसमाज जब अपने आरम्भिक काल में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना में संलग्न था तब राजा महेन्द्र प्रताप जी ने वृन्दावन में स्थित अपनी भूमि का एक बड़ा हिस्सा बगीचे सहित आर्यसमाज को दान में दिया था। आज उसी भूमि पर गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन जैसी विशाल संस्था

खड़ी है। आर्यसमाज के राजनैतिक सन्त स्वामी सोमदेव जी महाराज देश की आजादी के प्रमुख बलिदानी पं. रामप्रसाद बिस्मिल के गुरु व प्रेरक थे।

आगरा की आर्य मित्र सभा के वार्षिकोत्सव पर स्वामी

सोमदेव जी के व्याख्यानों को श्रवण कर राजा महेन्द्र प्रताप जी बड़े मुग्ध हुये। राजा साहब ने आपके पैर छुए और आपको अपनी कोठी पर लिवा ले गये। उस समय से राजा साहब बहुधा आपके उपदेश सुना करते थे और आपको अपना गुरु मानते थे। (अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आत्म कथा)

आर्यसमाज के इन अलमस्त फकीरों के चरणों में बैठकर ही राजा महेद्र प्रताप जी ने भारत की स्वाधीनता के तराने सीखे थे। इसी स्वाधीनता की मस्ती के कारण आपको अपनी रियासत तथा अन्य सभी भौतिक सम्पत्ति से भी हाथ धोने पड़े थे। एक दिन रात के बारह बजे ही अचानक आपने देश छोड़ने की तैयारी कर ली। सामने ही नव विवाहिता पत्नी खड़ी थी। राजा साहब उसे समझा रहे थे कि देवी! यह जवानी विषय भोगों में गंवाने की चीज नहीं है। आज बन्धन में पड़ी भारत माता देश की जवानियों की ओर अधीरता भरी नजरों से देख रही है। अतः यदि आज यह मेरी जवानी देश की स्वाधीनता के काम आ जावे तो इसमें जहाँ मेरा जन्म सफल है वहाँ उससे भी अधिक बढ़कर तुम्हारा जन्म धन्य होगा और आने वाली कल की पीढ़ियाँ तुम्हारे इस योगदान के यश का गुणगान करेंगी। देवी ने पूछा कि वहाँ से कब लौटोगे? उत्तर में कहा कि देवी कह नहीं सकता कि कब लौटूँ? और जीवित लौट भी पाता हूँ कि नहीं? इतना कह चल दिये और रूपोश होकर भारत से बाहर जा पहुँचे जहाँ विदेशों विशेषकर सीमा प्रान्त पर आप लगातार ३१ वर्ष तक भारत की आजादी की अलख जगाते रहे। उस काल में आप कहाँ-कहाँ पर गये, किस-किस से भेंट की, किस-किस से आजादी के लिये सहयोग की भिक्षा माँगी, कितने जंगल, पर्वत, गुफायें छान मारी, कभी भूखे प्यासे, कभी सर्दी-गर्मी में नंगे बदन, कभी काँटों से भरे जंगलों में बिना जूतों के ही मारे मारे फिरे, वह इतिहास तो भारत का एक अमूल्य किन्तु अलभ्य और प्रेरणास्पद अध्याय है जो कि उन्हीं के साथ परलोक चला गया है। विदेशों में आप एक आर्य सेना निर्मित कर भारत पर आक्रमण करके देश को विदेशी अंग्रेजों के पंजे से मुक्त कराने की योजना को भी क्रियान्वित करना चाहते थे। परन्तु उपयुक्त तथा विश्वस्त सहयोगियों, सहकर्मियों तथा साथियों के अभाव में आपका यह सपना, सपना ही रह गया। अंग्रेजों ने आपकी जो सम्पत्ति जब्त की थी वह देश के स्वतन्त्र होने पर भी आपको जीते जी कभी वापिस न मिल सकी। यह है स्वतन्त्र भारत में स्वदेश भक्ति, स्वदेश निष्ठा, देश की आजादी के लिए किये जाने वाले तप, त्याग, साधना व बलिदान का पुरस्कार तथा मूल्य? इससे अधिक इन शहीदों के प्रति हमारी और क्या कृतघ्नता होगी?

पाठक राजा महेन्द्र प्रताप जी के बलिदान और इस देश के नेताओं की कृतघ्नता पर भी विचार करें। यह भी तथ्य है कि जब राजा महेन्द्र प्रताप जी देश से बाहर निकले थे, उनके साथ स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र हरिश्चन्द्र भी गये थे। बताते हैं कि ब्रह्मचारी हरीश जी जिमनास्टिक में प्रवीण थे। अनुमान है कि उन्होंने भी गुप्त रूप से देश की आजादी के लिये कार्य किया। विदेश में उनके साथ क्या हुआ, वह गुमनामी में चले गये और उनके आजादी के लिये किये गये कार्यों, जीवन व मृत्यु का किसी को पता नहीं चल सका। स्वामी श्रद्धानन्द जी और उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री इन्द्र जी को भी श्री हरिश्चन्द्र जी का पता नहीं चला। सम्भवतः इसी कारण वह भी उनके विषय में कभी कुछ लिख नहीं सके।

राजा महेन्द्र प्रताप जी के विषय में हमने उपर्युक्त शब्दों को इसलिये लिखा है कि इनके विषय में देश की वर्तमान पीढ़ी व विद्वानों को ज्ञान हो सके। हम यह पंक्तियाँ सुधी पाठकों को समर्पित करते हैं।

- १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१, चलभाष- ०९४१२९८५१२१

□□□

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर संकल्प लें कि उनके दिखाए मार्ग का हम सब अनुसरण करें। परमात्मा हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

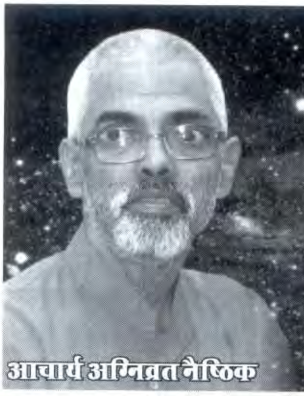

ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- ५

Eternal Universe

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

इस मत पर हमने एकमात्र प्रश्न यह उठाया था कि कोई भी कण वा कवाण्टा, जिसमें किसी भी प्रकार का बल अथवा क्रिया विद्यमान होती है, वह अनादि नहीं हो सकता। साथ ही हमने यह भी कहा था कि जो पदार्थ किसी अन्य सूक्ष्मतर पदार्थ के संयोग से बना है, वह अनादि नहीं हो सकता। इसका कारण भी हम इस सिद्धान्त की समीक्षा के समय बतला चुके हैं। अब हम सृष्टि के अनादित्व पर कुछ अन्य ढंग से विचार करते हैं क्या गति अनादि है- 'सृष्टि' शब्द का अर्थ है- 'नाना पदार्थों के बुद्धिपूर्वक- मेल से नवीन-२ पदार्थों की उत्पत्ति का होना' इस मेल की क्रिया में बल और गति का होना अनिवार्य है। **प्रश्न यह है कि क्या जड़ पदार्थ में स्वयं बल अथवा गति का होना सम्भव है?** इस सृष्टि में जो भी बल व गति दिखाई पड़ रहे हैं, क्या वे मूलतः उसके अपने ही हैं? इस विषय में महर्षि वेदव्यास का कथन है- 'प्रवृत्तेश्च (अनुपपत्तेः)' (व.सू.१.१.१) अर्थात् जड़ पदार्थ में स्वतः कोई क्रिया व गति आदि नहीं हो सकती। उसमें गति व क्रिया को उत्पन्न करने वाला कोई चेतन तत्व अवश्य होता है। हम अपने चारों ओर नाना प्रकार की गतियां निरन्तर देखते हैं, जिनमें से किन्हीं वस्तुओं को गति देने वाला चालक दिखाई देता है, तो किन्हीं गतियों का चालक दिखाई नहीं देता। अब हम विचार करते हैं कि कौन-२ से पदार्थ हैं, जिनका चालक दिखाई नहीं देता और कौन-२ से पदार्थ ऐसे हैं, जिनका चालक दिखाई देता है, किंवा दिखाई दे सकता है। हम बस, रेलगाड़ी, कार आदि वाहनों के चालक को प्रत्यक्ष देखते हैं, उनकी इच्छा वा प्रयत्न आदि क्रियाओं को अनुभव करते हैं। हम वाहन की गति को प्रारम्भ करने वाले चेतन वाहन चालक को देखते हैं परन्तु वाहन के इंजन में हो रही क्रियाओं को मात्र ईंधन से उत्पन्न मान लेते हैं। ईंधन वा उससे उत्पन्न ऊर्जा वाहन को कैसे गति देती है, विद्युत बड़े-२ यन्त्रों को कैसे चलाती है, विद्युत चुम्बकीय बल कैसे कार्य करते हैं, ऊर्जा व बल क्या है? इन प्रश्नों का हमें स्पष्ट ज्ञान नहीं है। वर्तमान वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं। *'Richard P- Feynnan'* लिखते हैं।

"It is important to realize that in physics today, we have no knowledge of what energy is-" _ **(Lectures on Physics- P. 40)**

"If you insist upon a precise definition of force you will never get it." _ **(id. P. 147)**

"Why things remains in motion when they are moving or why there is a law of gravitation was. of course not known." _ **[id. P.15]** क्रमशः......

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

❑❑❑

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

सत्य सनातन वैदिक धर्म एवं वैदिक संस्कृति का प्रतिबिम्ब आर्य समाज आज एक ऐसी भूमिका निभा रहा है जिससे हर भारतीय को जुड़ने एवं जानने की जरूरत है। नवलखा महल, गुलाबबाग जो एक ऐसी ज्ञान की सीढ़ी है जहाँ जाकर एवं आर्यावर्त्त चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से अपने वैदिक साहित्य को जानकर ऐसे गौरव की अनुभूति होती है जिसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है। इस न्यास के सभी अधिकारियों को शत-शत नमन, ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को निरन्तर रूप से करते रहने के लिए।

- अमिता एवं रमेश गुप्ता, न्यू जर्सी (यू.एस.ए.)

दिनांक २८ अक्टूबर २०१८ की प्रातःकाल से ही महाराणा सज्जनसिंह जी के बाग नवलखा महल में निवास करने का अवसर मिला, ईश्वर की कृपा है। आज ३० अक्टूबर २०१८ को आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा देखकर हृदय-मन-बुद्धि सम्पूर्ण शरीर आनन्दित है। एक संकल्प के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। सत्यार्थप्रकाश की इस पुण्यभूमि को नमन। आदरणीय श्री अशोक जी का हृदय से आभार।

- आचार्य धनञ्जय शास्त्री, गुरुकुल पौंधा, देहरादून

समाचार

शारदीय नवसस्येष्टि पूर्वक आर्य समाज कोटा ने मनाया महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण दिवस

प्रकाश अर्थात् ज्ञान की ओर चलने का दिव्य संदेश है दीपावली पर्व- आचार्य अग्निमित्र शास्त्री

कोटा, ११ नवम्बर। दीपावली महापर्व के अवसर पर कोटा की समस्त आर्य समाजों द्वारा गायत्री विहार में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण दिवस मनाया गया।

गायत्री विहार स्थित ब्राइटलैण्ड स्कूल परिसर में इस अवसर पर सर्वप्रथम आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरोहित्य में वैदिक पद्धति से शारदीय नवसस्येष्टि यज्ञ किया गया।

आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविंद पाण्डेय ने बताया कि इसके पश्चात् मुख्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन एवं उनके दर्शन की चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। जिस मृत्यु से सभी डरते हैं महर्षि दयानंद सरस्वती ने उसको ईश्वर की आज्ञा मान वरण किया तथा योग एवं प्राणायाम पूर्वक दीपावली के अवसर पर पंचभौतिक देह को त्यागा।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह पर्व हमें प्रकाश अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति एवं अज्ञान से निवृत्ति का संदेश देता है। जीवन में प्रकाश के महत्व के बारे में बतलाता है।

कार्यक्रम में आर्य विदुषी डॉ. सुदेश आहूजा ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि ईश्वर के प्रति समर्पण, निष्ठा और श्रद्धा स्वामी जी के जीवन में भरी हुई थी। स्वामीजी सत्य से परिपूर्ण जीवन के आदर्श प्रस्तोता हैं। कितनी ही कठिनाईयां आईं किंतु उन्होंने सत्य को कभी नहीं छोड़ा। इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सभी को संगठन के प्रति निष्ठा रखते हुए मिलजुलकर महर्षि दयानंद के कार्यों को आमजन तक पहुंचाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी ने किया। -अरविंद पाण्डेय, प्रधान

पाणिनी कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी का वार्षिकोत्सव ६ से ८ दिसम्बर २०१८ को भव्य रूप में मनाया जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के ख्यातनाम विद्वान् ,विदुषी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे।

- आचार्या नन्दिता शास्त्री

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम सम्पन्न

दिल्ली हाट पीतमपुरा, दिल्ली में महर्षि दयानन्द के १३५ वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में ११ कुण्डीय यज्ञ एवं संगीत संध्या का कार्यक्रम ८ नवम्बर २०१८ को सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री और संगीतकार नरेन्द्र आर्य सुमन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्यनेता एवं शिक्षाविद् श्री आनन्द चौहान (निदेशक, एमईटी शिक्षण संस्थान) ने की। मुख्य अतिथि श्री सत्येन्द्र जैन, मंत्री, दिल्ली सरकार थे। -अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर का महोत्सव सम्पन्न

गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट, करतारपुर के तत्वावधान में महाविद्यालय का ४८ वां वार्षिक महोत्सव ८ अक्टूबर से १४ अक्टूबर २०१८ तक सम्पन्न हुआ। महोत्सव में महात्मा चैतन्य मुनि, सुन्दरनगर और आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, नई दिल्ली, पंडित अजय आर्य, मेरठ के सारगर्भित प्रवचन अनेक विषयों पर हुए।

-डॉ. उदयन आर्य, प्राचार्य

गुरुकुल हरिपुर में नवम् चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

गुरुकुल, हरिपुर के तत्वावधान में २६ अगस्त से नवम् चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसकी पूर्णाहूति ६ सितम्बर २०१८ को हुई। १५ दिवसीय ५ से ६ घंटे चलने वाले इस महायज्ञ में प्रतिदिन नये नये यजमान दम्पति उपस्थित होकर लगभग १५०० मंत्रों से आहुति प्रदान करते थे। इस अवसर पर स्वामी विशुद्धानन्द जी, स्वामी सोमवेश जी व अन्य अनेक संन्यासी व विद्वान् उपस्थित रहे।

-दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य

18 वां दुर्लभ शारद यज्ञ सम्पन्न

दयानन्द मठ, चम्बा तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर १० अक्टूबर २०१८ को प्रातः ६.३० से ११अक्टूबर २०१८ को प्रातः १०.०० बजे तक शारद यज्ञ निरन्तर चलता रहा। सैंकड़ों लोगों ने इस अवसर पर श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

-आचार्य महावीर सिंह

डॉ. वेदपाल, परोपकारिणी सभा के प्रधान निर्वाचित

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वेदपाल को परोपकारिणी सभा का प्रधान निर्वाचित किया गया है तथा कार्यकारिणी निर्मित करने का दायित्व भी डॉ. साहब को ही दिया गया है। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से माननीय डॉ. साहब को बधाई एवं शुभकामनाएं।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ में क्रियात्मक योग शिविर सम्पन्न

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ में १८ नवम्बर से २५ नवम्बर २०१८ तक आचार्य सत्यजित् जी की अध्यक्षता में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का विशेष सान्निध्य रहा।

डॉ. सत्यार्थी को अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य शिरोमणि की उपाधि

आर्यसमाज, मंदिर, नागदा के धर्माचार्य डॉ. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी को उनकी हिन्दी साधना के उपलक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवा संस्थान, इलाहबाद द्वारा 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य शिरोमणि' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। डॉ. सत्यार्थी को बधाई देते हुए प्रभु से उनके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं।

सर्वजातीय सम्मेलन में रिश्ते हुए तय

आर्यसमाज, संचार नगर, इन्दौर के तत्वावधान में २५ वें युवक युवती परिचय सम्मेलन में २५ रिश्ते तय हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रकान्ता वधवा ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. कैलाश चन्द्र खण्डेलवाल थे। सम्मेलन का संचालन प्रसिद्ध समाज सेवी श्री बलराज सबलोक ने किया।

-आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक साधुआश्रम भरतपुर का 28वां वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक साधु आश्रम जघीना गेट सरकूलर रोड भरतपुर के २८वें वार्षिकोत्सव के तीसरे दिवस, यज्ञ के ब्रह्मा चन्द्रदेव शास्त्री एवं देशराज शास्त्री द्वारा वेदमंत्रों का उच्चारण कर यज्ञ में आहुतियां दिलाई गईं।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मंत्री सत्यदेव आर्य व साधु आश्रम के मंत्री गोविन्द आर्य ने बतलाया कि यह कार्यक्रम २० तारीख से निरंतर चल रहा है। इसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य उपदेशक आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री फर्रूखाबाद, देशराज शास्त्री सूरोता, उमेश कुलश्रेष्ठ आगरा व राष्ट्रीय भजनोपदेशक रामगोपाल आर्य जावरा, सुश्री प्रियंका देव भारती कन्या गुरुकुल भुसावर ने भाग लिया। आचार्य उमेश कुलश्रेष्ठ ने आर्य समाज द्वारा पूजा किसकी व उसकी पद्धति क्या है बतलाते हुए कहा कि आर्य समाज छः जड़ देवता, जल, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, वनस्पति, पृथ्वी व छः चेतन देवता माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पति, पत्नि की पूजा बतलाता है। जड़देवता की पूजा यज्ञ द्वारा ही संभव है।

कार्यक्रम में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, ओमप्रकाश आर्य, मंत्री सत्यदेव आर्य, कोषाध्यक्ष वीरेन्द्र, कुम्हेर साधु आश्रम के अध्यक्ष विश्वमित्र, मंत्री गोविन्द आर्य, कोषाध्यक्ष राजवीर सिंह के साथ ही मानसिंह, झम्मन सिंह, महेन्द्र सिंह फौजी, गणेश मुनि, योगी, अमरचंद, साहित्यकार, राम सिंह वर्मा, केप्टन आर्य, वलवीर सीडीओ एवं भरतपुर जिला व आसपास के सभी धर्म प्रेमियों ने भाग लिया।

साधु आश्रम की समस्त कार्यकारिणी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया। - सत्यदेव आर्य

आर्य समाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव अत्यन्त भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, श्री दीनानाथ शास्त्री आदि विद्वान् उपस्थित थे जिनके प्रेरक प्रवचनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के हाल ही में सम्पन्न निर्वाचनों में पुनः सर्वसम्मति से प्रधान व महामंत्री के पद का दायित्व क्रमशः आदरणीय भाई धर्मपाल जी एवं श्री विनय आर्य जी के सशक्त नेतृत्व को सौंपा है। भाई धर्मपाल जी एवं विनय जी को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

'मनु का विरोध क्यों' विषय पर आर्यसमाज दयानन्द गंज, इंदौर में कार्यशाला संपन्न

आर्यसमाज दयानंदगंज, इंदौर, मध्यप्रदेश में आर्यसमाज के प्रसिद्द वैदिक विद्वान् डा. विवेक आर्य जी द्वारा मनुस्मृति के विषय में भ्रांतियों पर व्याख्यान दिया गया। मनुस्मृति के विषय में बहुत अधिक भ्रांतियां हैं। इसका मूल कारण मनुस्मृति में मध्यकाल में हुई मिलावट है। डॉ. विवेक आर्य ने प्रमाण सहित सिद्ध किया कि - मनुस्मृति सृष्टि के प्रथम आदि राजा मनु द्वारा रचित प्रथम संविधान है। स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत के प्रथम ऐसे विचारक हैं जिन्होंने यह सिद्ध किया कि वर्तमान में उपलब्ध मनुस्मृति मनु की मूलकृति नहीं है। उसमें बड़े पैमाने पर मिलावट हुई है। यही मिलावट मनुस्मृति के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों का मूल कारण है।

मनुस्मृति पर सबसे बड़ा आक्षेप जातिवाद को समर्थन देने का लगता है। जबकि सत्य यह है कि मनुस्मृति जातिवाद नहीं अपितु वर्णव्यवस्था की समर्थक है। मनु के अनुसार एक ब्राह्मण का पुत्र अगर गुणों से रहित होगा तो शूद्र कहलायेगा और अगर एक शूद्र का पुत्र ब्राह्मण गुणों वाला होगा तो ब्राह्मण कहलायेगा।

मनुस्मृति पर दूसरा बड़ा आक्षेप नारी जाति को निम्न दर्शाने का लगता है। सत्य यह है कि मनुस्मृति नारी जाति को पुरुष के बराबर नहीं अपितु उससे श्रेष्ठ मानती है। मनुस्मृति पर तीसरा आक्षेप यह है कि मनुस्मृति पशु हिंसा की समर्थक है। यह भी एक भ्रान्ति है।

- श्री गिरीश आर्य, युवा शाखा, आर्यसमाज, दयानंदगंज, इंदौर, मध्यप्रदेश

निवेदनः अपरिहार्य कारणों से 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' के विजेताओं के नाम इस अंक में प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। अगले अंक में दोनों माह के विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।

- सुरेश पाटोदी, व्यवस्थापक

स्वास्थ्य

नेत्रदृष्टि क्या है?

नेत्रदृष्टि प्रकाश की अनुभूति है जो वस्तुओं द्वारा आँख(आँखों) से दृश्य के रूप में अनुभव और मस्तिष्क द्वारा प्रसंस्कृत की जाती है। दृष्टि को नेत्रदृष्टि, देखना और दिखाई पड़ना भी कहा जाता है। इस प्रक्रिया के बाद के हिस्सों को दृष्टि अनुभव भी कहा जाता है।

दृष्टि सम्बन्धी समस्याओं के प्रकार

वयस्कों को होने वाली सबसे आम दृष्टि सम्बन्धी समस्याओं में धुंधला दिखना (जिन्हें रेफ्रेक्टिव एरर कहते हैं), आयु सम्बन्धी मैकुलर डिजनरेशन, ग्लूकोमा, मोतियाबिंद, मधुमेहजनित रेटिनोपेथी आदि आते हैं। बच्चों में होने वाली दृष्टि सम्बन्धी सबसे आम समस्याओं में धुंधला दिखना, भेंगी आँखें (जिसे स्ट्रेबिस्मस कहते हैं), सुस्त आँख (जिसे दृष्टि मंदता कहते हैं) हैं।

संकेत और लक्षण

* आँखों में होने वाला एकाएक, तीव्र दर्द।
* अस्पष्ट, धुंधला या दोहरा दिखाई देना।
* प्रकाश की चिंगारियाँ या एकाएक तैरते हुए चमकीले बिंदु दिखाई पड़ना।
* प्रकाश के आस-पास इन्द्रधनुषी रंग या आभामंडल दिखाई देना।
* प्रकाश या चमक के प्रति असामान्य, बल्कि दर्दयुक्त संवेदनशीलता।
* सूजी हुई और लाल आँखें।
* पुतली के रंग में बदलाव।
* आँख के तारे में सफेद हिस्से।
* आँखों में खुजली, जलन होना या अधिक मात्रा में द्रव बहना।

दृष्टि सम्बन्धी समस्याओं के कारण

* कम प्रकाश में पढ़ना या कार्य करना और चमकदार प्रकाश में आँखों की सुरक्षा के बिना रहना तथा लम्बे समय तक टीवी देखना।
* दृष्टि के मंद होने का अन्य कारण जो कि पहले कारण से मिलता-जुलता है, वह है लम्बे समय तक बारीक छपे अक्षरों को पढ़ना और कंप्यूटर पर लम्बे समय तक कार्य करना।
* पोषण और आहार हमारी दृष्टि के मंद होने का एक और प्रमुख कारण हो सकते हैं। आपकी आँखें दो आवश्यक और प्रमुख अंग हैं जिन्हें अपने सूक्ष्म कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए संतुलित पोषण की आवश्यकता होती है।

बचाव के तरीके

* स्क्रीन को निश्चित दूरी पर रखें। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि आप अपनी आँखों को कंप्यूटर स्क्रीन से कम-से-कम एक हाथ की दूरी पर और हाथ में उपस्थित किसी यन्त्र से १६ इंच की दूरी पर रखें।
* आँखें झपकाने का विराम लें। आँख झपकना महत्वपूर्ण है क्योंकि आँख की उपरी पलक, नेत्र या कॉर्निया के सामने की तरफ तरल पदार्थ फैलाती है।
* सुरक्षात्मक चश्मा पहनें। चश्मे आँखों को अल्ट्रावायलेट किरणों की चपेट से बचाते हैं। इन किरणों की चपेट दृष्टि को कम कर सकती है और मोतियाबिंद, आयु सम्बन्धी मैकुलर डिजनरेशन और आँखों की सतह, पलकों तथा इसके आसपास की त्वचा पर कैंसररहित या कैंसरयुक्त वृद्धि / उत्पत्ति कर सकती है।
* शायद आप यही जानते होंगे कि ओमेगा-३ फैटी एसिड हृदय और मस्तिष्क के स्वास्थ्य को उन्नत करते हैं किन्तु ये आपकी आँखों में रोगों के होने की संभावनाओं को भी कम कर सकते हैं।
* अपने मेकअप के तौर-तरीकों में बदलाव करें। मस्कारा में बैक्टीरिया पनप सकते हैं, इसलिए तीन माह बाद ट्यूब बदल दें। इसके अलावा, लाइनर पेंसिलों की नोक नियमित रूप से बनाते रहें। आपकी बरौनियों के आधार पर लाइन बनाने, किन्तु बरौनियों की रेखा के भीतर लाइनर लगाने से, आपकी आँखों की सतह की सुरक्षा करने वाली तैलीय ग्रंथियाँ अवरुद्ध हो सकती हैं।

□□□

साभार- त्रिवेणी (एम.तत्व.कांम)

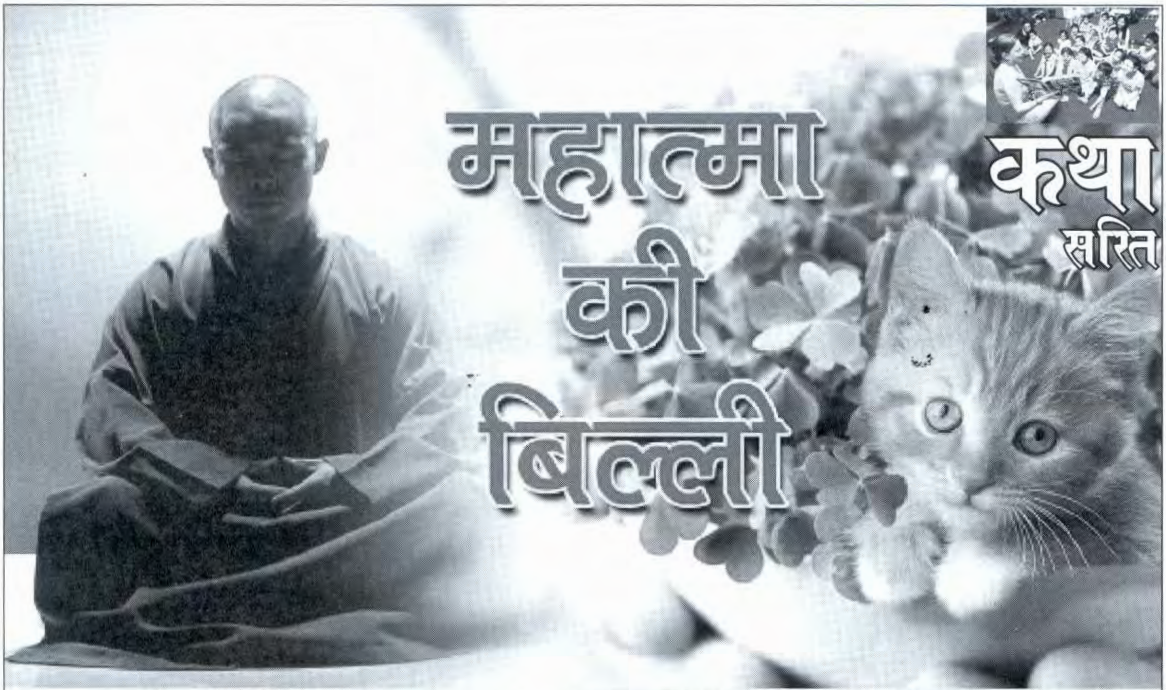

महात्मा की बिल्ली

एक बार एक महात्माजी अपने कुछ शिष्यों के साथ जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। एक दिन कहीं से एक बिल्ली का बच्चा रास्ता भटक कर आश्रम में आ गया। महात्माजी ने उस भूखे प्यासे बिल्ली के बच्चे को दूध-रोटी खिलाई। वह बच्चा वहीं आश्रम में रहकर पलने लगा। लेकिन उसके आने के बाद महात्माजी को एक समस्या उत्पन्न हो गयी कि जब वे सायं ध्यान में बैठते तो वह बच्चा कभी उनकी गोद में चढ़ जाता, कभी कन्धे या सिर पर बैठ जाता, तो महात्माजी ने अपने एक शिष्य को बुलाकर कहा- देखो मैं जब सायं ध्यान पर बैठूँ, उससे पूर्व तुम इस बच्चे को दूर एक पेड़ से बाँध आया करो। अब तो यह नियम हो गया, महात्माजी के ध्यान पर बैठने से पूर्व वह बिल्ली का बच्चा पेड़ से बाँधा जाने लगा ।

एक दिन महात्माजी की मृत्यु हो गयी तो उनका एक प्रिय काबिल शिष्य उनकी गद्दी पर बैठा। वह भी जब ध्यान में बैठता तो उससे पूर्व बिल्ली का बच्चा पेड़ से बाँध दिया जाता। फिर एक दिन तो अनर्थ हो गया, बहुत बड़ी समस्या आ खड़ी हुयी कि बिल्ली ही खत्म हो गयी। सारे शिष्यों की मीटिंग हुयी, सबने विचार-विमर्श किया कि बड़े महात्माजी जब तक बिल्ली पेड़ से न बाँधी जाये, तब तक ध्यान में नहीं बैठते थे। अतः पास के गाँवों से कहीं से भी एक बिल्ली लायी जाये। आखिरकार काफी ढूँढ़ने के बाद एक बिल्ली मिली, जिसे पेड़ पर बाँधने के बाद महात्माजी ध्यान पर बैठे।

विश्वास मानें, उसके बाद जाने कितनी बिल्लियाँ मर चुकीं और न जाने कितने महात्माजी मर चुके। लेकिन आज भी जब तक पेड़ पर बिल्ली न बाँधी जाये, तब तक महात्माजी ध्यान में नहीं बैठते हैं। कभी उनसे पूछो तो कहते हैं यह तो परम्परा है, हमारे पुराने सारे गुरुजी करते रहे, वे सब गलत तो नहीं हो सकते। कुछ भी हो जाये हम अपनी परम्परा नहीं छोड़ सकते।

यह तो हुयी उन महात्माजी और उनके शिष्यों की बात। **पर कहीं न कहीं हम सबने भी एक नहीं अनेकों ऐसी बिल्लियाँ पाल रखी हैं।** कभी गौर किया है इन बिल्लियों पर? **सैकड़ों वर्षों से हम सब ऐसे ही और कुछ अनजाने तथा कुछ चन्द स्वार्थी तत्वों द्वारा निर्मित परम्पराओं के जाल में जकड़े हुए हैं।**

जरुरत इस बात की है कि हम ऐसी परम्पराओं और अंधविश्वासों को अब और ना पनपने दें, और अगली बार ऐसी किसी चीज पर यकीन करने से पहले सोच लें कि कहीं हम जाने-अनजाने में कोई अन्धविश्वासरूपी बिल्ली तो नहीं पाल रहे हैं?

□□□

साभार- **Achchikhabar.com**

विविध सृष्टि ईश्वर की रचना

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारइवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत॥ - ऋग्वेद १०/७२/२

दिव्य लोक लोकान्तरों की आदि रचना के अवसर पर सर्वोत्कृष्ट ब्रह्म ने इन समस्त लोकों का इसी प्रकार निर्माण किया जैसे कोई शिल्पी उपयुक्त साधनों से कार्य की रचना किया करता है।

डॉ. जान क्लीवलैण्ड ने सत्य ही लिखा है-

'इसलिए हमारा तर्कसंगत और जिसमें बचा नहीं जा सकता वह निष्कर्ष यह है कि न केवल सृष्टि की रचना हुई जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी (सर्वज्ञ)। जिसमें अपनी योजना के अनुसार इसके रचने और इसके जारी रखने का सामर्थ्य था (सर्वशक्तिमान) और जो सर्वत्र और समस्त विश्व में उसे लागू कर सकता था (सर्वव्यापक)। (डॉ. जान क्लीवलैण्ड कांथरान, प्रसिद्ध गणितज्ञ, रसायनविद् मिनेसोटा विश्वविद्यालय)

अतएव निःसंदेह वह अक्षरशः सत्य है जो महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के ज्ञान के प्रत्यक्ष की ओर इंगित करते हुए सत्यार्थप्रकाश में लिखा है- 'देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाडों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन; जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम-नखादि का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभाग करण, कला कौशल स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को विना परमेश्वर के कौन कर सकता है?

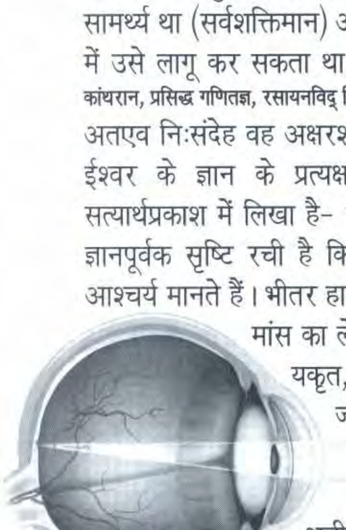

ईश्वर सिद्धि-सृष्टिकर्त्ता होने से-

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।। - ऋग्वेद १/१५४/१

उस सर्वव्यापक ब्रह्म की शक्तियों का कथन कैसे हो, जिसने पृथिव्यादि समस्त लोक-लोकान्तरों की रचना की है।

इसके विना नाना प्रकार के रत्न धातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार वट वृक्ष आदि के बीजों में अति सूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण, चित्र मध्यरूपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, मूल निर्माण; मिष्ट, क्षार, कटुक, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध रस' सुगन्धादि युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि रचन; अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल, सूर्य्य-चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के विना कोई भी नहीं कर सकता। (सत्यार्थ प्रकाश-अष्टम समुल्लास)

इस प्रकार ईश्वर के कर्मों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए कर्त्ता अर्थात् परमपिता परमात्मा के अस्तित्व का दृढ़तापूर्वक विश्वास होता है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

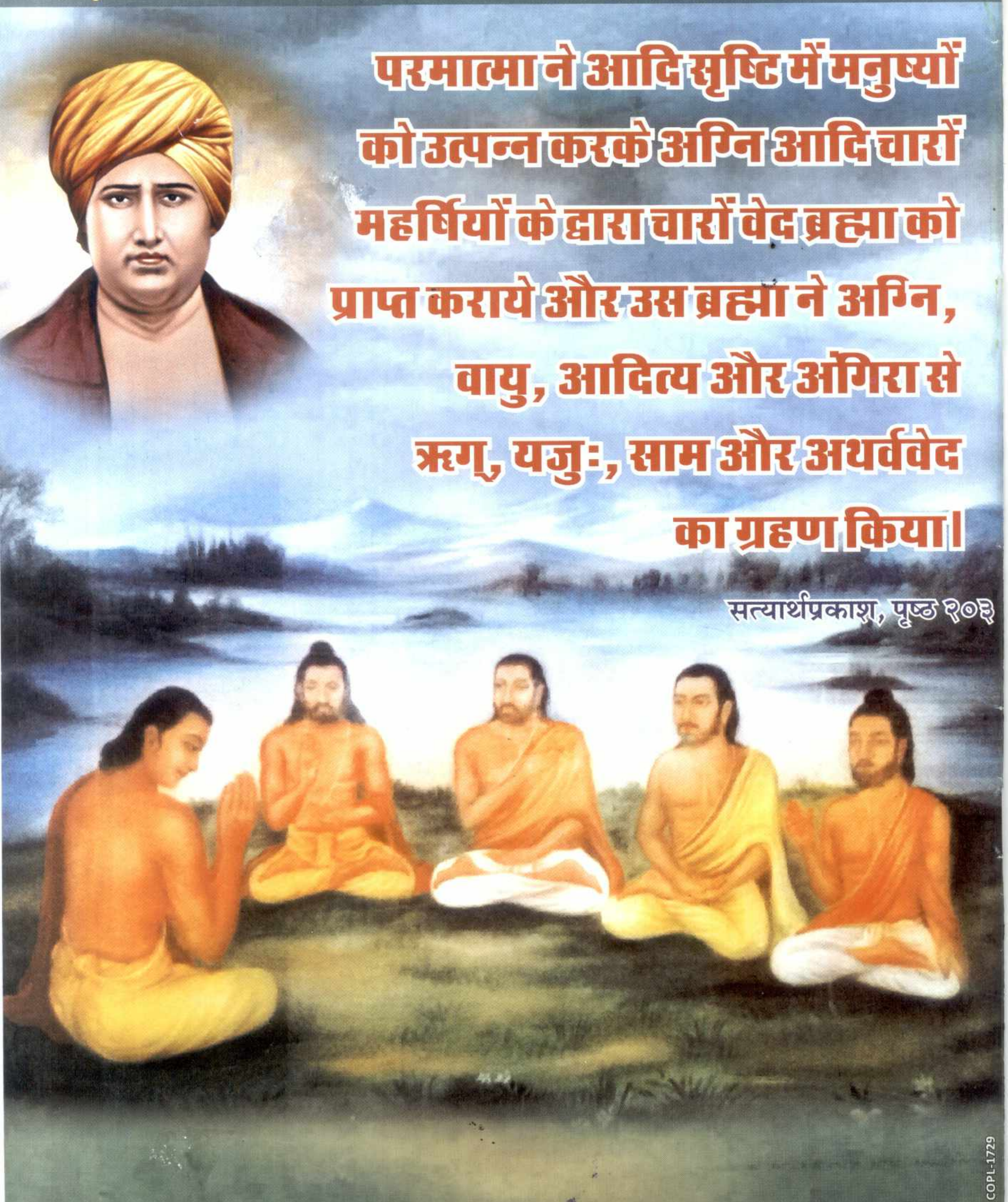

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर